Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-16
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 04 जुलाई से 10 जुलाई 2018 तक
आषाढ़ कृष्ण षष्ठी से आषाढ़ कृष्ण द्वादशी 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

बहुत ही वैज्ञानिक... पृष्ठ- 2
तनाव की जड़ को.... पृष्ठ- 3
गुर्दों की अक्षमता.. पृष्ठ- 4
भारत में भाषा का... पृष्ठ- 7
मजबूर किसान... पृष्ठ- 12

- भाजपा कभी नहीं हटाएगी आरक्षणः अमित शाह
- आर्थिक परिदृश्य में क्रान्ति का यह दौर और सशक्त राष्ट्र बनता भारत
- जिन्नाह के जिन्न से नही जिन्नाहवादी सोच से बचो
- राष्ट्रीयकरण का विकल्प श्रमीकरण
- क्या संस्कृत पढ़ने से अर्थार्जन नहीं हो सकता?

अमेरिकी प्रतिबंध के बावजूद रूस के साथ एस ४०० सौदे को आगे बढ़ाएगा भारत

भारत अपने वैश्विक अस्तिव को मजबूत बना आगे बढ़े–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

रूस पर अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद भारत ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि रक्षा क्षेत्र में समय की कसौटी पर खरा उतरा भारत रूसी सहयोग जारी रहेगा और वायुसेना के लिये एस–४०० ट्रायंफ वायु रक्षा मिसाइल प्रणाली सौदा आगे बढ़ेगा। भारत की रूस से अपनी वायु सेना के लिए एस–४०० ट्रायंफ वायु रक्षा मिसाइल प्रणाली खरीदने की योजना है। सूत्रों के अनुसार भारत चाहता है कि रूस के साथ उसके रक्षा क्षेत्र शेष पृष्ठ 11 पर

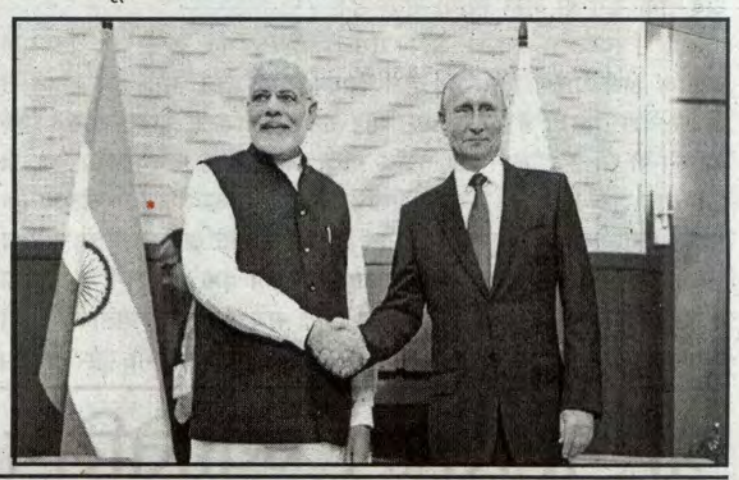

दुनियाभर में प्लास्टिक सकंट समुद्रों में १ मिनट में १ ट्रक फेंका जाता है कूड़ा

सम्पूर्ण भारत में तुरन्त प्रतिबंधित हो प्लास्टिक का अवैध इस्तेमाल–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर दुनियाभर में प्लास्टिक के इस्तेमाल को लेकर चर्चा छिड़ गई है। वियतनाम में एक समुद्री पेड़ का पूरी तरह पॉलिथीन से लिपटा पाया जाना, थाईलैंड के एक समुद्र में प्लास्टिक बैग निगलने के कारण व्हेल मछली का मर जाना और इंडोनेशिया के पैराडाइज द्वीप समूहों के पास पानी में कूड़े का अंबार मिलना, प्लास्टिक संकट की एक डरावनी तस्वीर पेश करता है जो एशिया को अपनी गिरफ्त में ले रहा है। दुनिया भर के महासागरों में हर साल ८० लाख टन प्लास्टिक फेंका जाता है यानि हर दिन और हर मिनट एक ट्रक कूड़ा प्लास्टिक समुद्र में फेंका जाता है। महासागर संरक्षण को लेकर २०१५ में आई एक रिपोर्ट के मुताबिक इसमें से आधे से ज्यादा कूड़ा एशिया के पांच देशों चीन, इंडोनेशिया, फिलीपीन, थाईलैंड और वियतनाम से आता है। ये सभी देश एशिया की तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएं हैं जहां प्लास्टिक का उत्पादन, खपत और निस्तारण बड़ी मात्रा में होता है। ज़्यादातर देशों में इसका निस्तारण सही तरीके से नहीं किया जाता। इंडोनेशिया में ग्रीनपीस के अभियानकर्ता अहमद शेष पृष्ठ 11 पर

बहुत ही वैज्ञानिक रही हैं स्वच्छता से जुड़ी भारतीय पौराणिक मान्यताएं

स्नानः हमारे पौराणिक ग्रन्थों में स्नान का विशेष उल्लेख है। किसी भी कार्य से पहले हाथ धोना, स्नान करना आदि के पीछे केवल धार्मिक मान्यता ही नहीं बल्कि इनके पीछे एक वैज्ञानिक सोच समझ भी होती है। भोजन करने से पहले हाथ धोने की कला हमसे बेहतर कौन जानता है। जूठे होने की अवधारणः मुँह लगाकर किसी चीज के इस्तेमाल के बाद दूसरों को उसे इस्तेमाल करने से रोका जाता है। जूते चप्पल बाहर निकालनाः हम घर के प्रवेश द्वार पर ही अपने जूते चप्पल निकाल देते हैं इसके पीछे धारणा है कि हम लोग गलियों की धूल गंदगी को अपने घर के सुरक्षित हिस्से तक नहीं पहुंचाना चाहते।

पश्चिम ने हमसे स्वच्छता सीखीः खुद को स्वस्थ रखने की विधा पर लिखी गई दो पुस्तकों में स्वच्छता और साफ–सफाई को लेकर देशों की मानसिकता का पता चलता है। वर्जीनिया स्मिथ द्वारा लिखी गई किताब, 'क्लीनः ए हिस्ट्री ऑफ पर्सनल हाईजीन एण्ड प्योरटी' और कैथरीन एसेनबर्ग की पुस्तक 'द डर्ट ऑन क्लीन' एन अनसैनीटाइज़ हिस्ट्री' में बताया गया है कि सोलहवीं और उन्नीसवीं सदी के बीच पश्चिम में स्नान को अभिशाप माना जाता था। डाक्टर स्नान करने को बीमार होने और रोगों की वजह बताते थे।

यूरोपीय सोचः यूरोप में सफाई के मायने ही अलग हैं। फ्रांस में आज भी रोजाना स्नान को लेकर लोग अन्यमनस्क रहते हैं माना जाता है कि इसीलिए यूरोप के देशों में इस उद्योग तेजी से विकसित हुआ। लोग स्नान करने की जगह इत्र जैसी सुगन्धित चीजें छिड़कना ज्यादा आसान समझते थे। अपर्याप्त साफ सफाई और स्वच्छता के चलते लोग मारे जाते हैं बीमारियां होती हैं, पर्यावरण प्रदूषित होता है लोगों का कल्याण क्षीण होता है, इन सब परिणामों से सब कोई वाकिफ होता है लेकिन खराब स्वच्छता के आर्थिक असर का आकलन अब तक ढंग से नहीं किया गया है।

स्वच्छता स्वस्थ और समृद्ध जीवन की कुंजी है यह एक व्यापक अर्थ धारण किए हुए है जिसका संबंध तन, मन, घर शहर से लेकर देश दुनिया में व्याप्त भ्रष्टाचार रूपी कीचड़ से मुक्ति और स्वच्छ शासन से भी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश में स्वच्छता का जो अभियान शुरू किया है, उसका शंखनाद आजादी आंदोलन के महानायक महात्मा गाँधी ने कानपुर की जमीन पर भी अपनी अंतिम यात्रा में खुद गंदगी साफ करके किया था। ग्वाल टोली की एक बस्ती में वे फावड़ा और झाड़ू उठाकर स्वयं सफाई में जुट गये। उन्होंने वातावरण की स्वच्छता के साथ सामाजिक व आत्मिक स्वच्छता पर भी जोर दिया।

श्री भीमशंकर ज्योतिर्लिंग

महाराष्ट्र के सह्यादि पर्वतीय श्रृंखला में भीमा नदी के तंट पर श्री भीमशंकर ज्योतिर्लिंग बिराजमान है। इस ज्योतिर्लिंग के साथ भीमक एवँ सुतिक्षण नामक राजाओं की तपस्या के संबंध है। भगवान शिव अपने भक्तों

की सुरक्षा करने के लिए सदैव त्रिशुल धारण करते रहते है और असूरों का संहार करते है। अन्य परंपराओं के अनुसार भीमशंकर ज्योतिलिग असम राज्य के गौहत्ती और दूसरा नैनीताल के पास होने की मान्यता है। भगवान शिव के कई स्वरूप है। अपने रुद्र स्वरूप से भगवान शिव तांडवनृत्य करते है। यही प्रलय का कारण माना जाता है। सृष्टि के निर्माण और विसर्जन में इस लय–प्रलय की क्रिया का बड़ा ही महत्त्व है। ब्रह्मांड का प्रत्येक पदार्थ परिवर्तनशील है। पदार्थ के सूक्ष्म कण को परमाणु कहते है। परमाणु के संयोजन एवँ विखंडन से प्रचंड ऊर्जा उत्पन्न होती है। आण्विक प्रक्रियाओं का रचनात्मक उपयोग हमे ऊर्जा पदान करता है। तो इन सबका दुरुपयोग समग्र सृष्टि का विनाश कर सकता है। प्रसिद्ध अणु–वैज्ञानिक, फ्रीत्जोफ काप्रा के पुस्तक Tao of Physics' के प्रथम पृष्ठ पर शिवतांडव का चित्र है। श्री काप्रा के मतानुसार शिवा का तांडव स्वरूप आण्विक विखंडन और संयोजक की प्रक्रिया का सबसे सुचारु रूपक है। आओ, भगवान शिव के इस रहस्यमय स्वरूप को समझें एवँ हमारी महान वैज्ञानिक उपलब्धियों का विश्व कल्याण के मार्ग में उपयोग करें।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : कुछ लोगों का सामाजिक कार्यों से मान प्रतिष्ठा में लाभ होगा लेकिन आपसी विवादों से बचना ही हितकर रहेगा। आपके उत्साह में वृद्धि होगी और कुछ कर गुजरने की योग्यता का प्रर्दशन करेगें। आमदनी की उतनी बढ़ोत्तरी नहीं होगी।

वृष : इस सप्ताह आपके परिवार में अचानक मतभेद उत्पन्न होगे। सन्तान की प्रगति में बाधा आ सकती है। क्रोध बहुत आयेगा और चिडचिड़ापन भी पैदा हो सकता है। नौकरी पेशा वालों को पदोन्नति का लाभ मिलेगा।

मिथुन : इस सप्ताह कुछ लोगों को आकस्मिक धन लाभ के योग बनेंगें। धार्मिक कार्यों का आयोजन घर मे हो सकता है। इन दिनों आपको अनिद्रा की भी शिकायत हो सकती है। किसी मित्र का सहयोग आपको लाभ दिलायेगा।

कर्क : कुछ लोगों के द्वारा पछले सप्ताह किये गये कार्यो का प्रतिफल प्राप्त होगा। कुछ लोगों को मकान, वाहन या जमीन जायदाद के प्राप्ति के योग बनेगे। आप जो कुछ भी करेगे इस समय आपको लाभ ही लाभ होगा। सर्दी जुकाम जैसे रोगों से सावधान रहना होगा।

सिंह : इस सप्ताह आमदनी के नये स्रोत बनने की संभावना है। अपने कार्य या व्यवसाय के अलावा धर्म कर्म में भी रूचि बढ़ेगी। इस समय पड़ोसियों से सावधान रहे अन्यथा समस्या खड़ी हो सकती है। कोई रूका हुआ कार्य आपका इस समय पूर्ण होगा।

कन्या : नये कार्य इस समय नहीं करने चाहिए क्योंकि श्रम अधिक करना पडेगा और उसके मुकाबले लाभ कम मिलेगा। परिवार में पिता या बुजुर्ग के स्वास्थ्य में समस्या आ सकती है। स्वयं भी स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न करें। रूके हुये धन की प्राप्ति होगी।

तुला : इस सप्ताह आप शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को लेकर परेशान व चिन्तित रह सकते है। आर्थिक मामले में इस समय कुछ सुधार जरूर होगा। लेकिन धनाभाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि आप व्यवसाय में साझेदारी करेंगे में तो उसके समय अनुकूल है।

वृश्चिक : इस सप्ताह आप–अपनी वाणी पर नियन्त्रण पर रखें क्योंकि राहु नवें भाव में स्थित है, जो कि व्यवहार के सामंजस्य बिगाड़ सकता है। छोटे बच्चों के माथे या सिर पर चोट लग सकती है। भाग्य एक तरफ आपके आय में बढोत्तरी करेगा।

धनु : इस सप्ताह कुछ लोगों को मित्रों तथा रिश्तेदारों से अप्रत्याशित व्यवहार का सामना करना होगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अच्छा है जो लोग किसी परीक्षा में बैठेगें उनके लिए यह समय बहुत ही अच्छा है। अविवाहितों के विवाह होने के योग बनेगे।

मकर : कुछ लोगों को सन्तान के कार्यो से दुःख मिलेगा। मित्रों को शत्रु न बनाये अन्यथा धन की हानि होने की सम्भावना है। कार्य योजनाओं के निस्तारण के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ सकती है। माता व पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

कुम्भ : व्यापार व व्यवसाय में प्रगति होगी। लेखन से सम्बन्धित कार्यो में लाभ होगा। नौकरी में सावधान रहने की आवश्यकता है। सन्तान की तरफ से प्रसन्नता रहेगी। साझेदारी के कार्यो में लाभ होगा। इस समय आपको आलस्य बहुत आयेगा।

मीन : इस सप्ताह कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। आय की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं है। धर्म व कर्म पर खर्च होगा। स्वभाव नकारात्मक रहेगा जिससे सन्तान सुख में बाधा आयेगी। अविवाहित लोगों के विवाह का योग बन रहा है। कर्ज से बचना चाहिए।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः।
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते।।

फल को न चाहने वाले योगी पुरुषों द्वारा परम श्रद्धा से किये हुए उस पूर्वोक्त तीन प्रकार के तप को सात्त्विक कहते हैं।।१७।।

सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत्।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमधुवम्।।

जो तप सत्कार, मान और पूजा के लिये तथा अन्य किसी स्वार्थ के लिये भी स्वभाव से या पाखण्ड से किया जाता है, वह अनिश्चित एवं क्षणिक फलवाला तप यहाँ राजस कहा गया है।।१८।।

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्।।

जो तप मूढ़तापूर्वक हठ से, मन, वाणी और शरीर की पीड़ा के सहित अथवा दूसरे का अनिष्ट करने के लिये किया जाता है– वह तप तामस कहा गया है।।१९।।

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।।

दान देना ही कर्तव्य है–ऐसे भाव से जो दान देश तथा काल और पात्र के प्राप्त होने पर उपकार न करने वाले के प्रति दिया जाता है, वह दान सात्त्विक कहा गया है।।२०।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 04 जुलाई से 10 जुलाई 2018 तक

अध्यक्षीय

तनाव की जड़ को समझें, शांति बनाएं

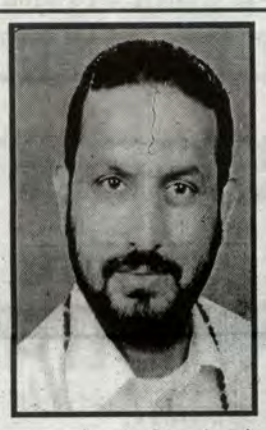

मेघालय की राजधानी शिलांग में पिछले छह दिनों से लगातार तनावपूर्ण माहौल बना हुआ है। बीते गुरुवार एक मामली विवाद से हिंसा भड़क उठी। बताया जा रहा है कि एक बस में खलासी का काम कर रहे खासी समुदाय के युवक और एक दलित पंजाबी लड़की के बीच किसी बात को लेकर कहा–सुनी हुई। यह मामला शांत हो सकता था। लेकिन इस झगड़े की चिंगारी को राजनीति की हवा दी गई और अब आलम यह है कि शिलांग बीते एक हफ्ते से कर्फ्यू के साए में है। खासी समुदाय और पंजाबी दलितों के बीच शुरू में हिंसा भड़की। कानून–व्यवस्था बरकरार करने के लिए केंद्र ने अर्द्धसैनिक बलों की एक कंपनी भेजी। हिंसा और तनाव को देखते हुए प्रशासन ने इंटरनेट सेवाओं को बंद कर दिया गया। लेकिन इन सबके बावजूद जीवन पटरी पर नहीं लौटा है और लौट पाएगा या नहीं, यह बड़ा सवाल है। अमूमन दंगे भड़काने या दो समुदायों के बीच झगड़ा कराने के पीछे किसी तीसरे के फायदे का मकसद छिपा होता है। शिलांग में भी कुछ ऐसा ही लगता है। कहा जा रहा है कि बाहर से आकर बसे पंजाबी समुदाय से स्थानीय खासी समुदाय नाराज है और चाहता है कि वे यहां से हट जाएं। स्थानीय बनाम बाहरी का यह विवाद महाराष्ट्र, असम, कर्नाटक जैसे राज्यों में भी कई बार उठा है और उसके पीछे मकसद हमेशा राजनीतिक लाभ रहा है। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि जिस दलित पंजाबी समुदाय को शिलांग में बाहरी बताया जा रहा है, वह बीते दो सौ सालों से वहां रह रहा है। शिलांग शहर के बीचों–बीच पंजाबी लेन की करीब दो एकड़ जमीन पर दलित सिख बसे हैं। यहां गुरुद्वारा है, गुरुनानक प्राथमिक विद्यालय है, शिव मंदिर भी है और चर्च भी। सिखों और खासी समुदाय के बीच वैवाहिक संबंध भी स्थापित हुए है। २ सौ सालों से किसी जगह पर रहना, यानी कम से कम ५–६ पीढ़ियों का जीवन वहां गुजरना है, फिर उन्हें अभी बाहरी क्यों कहा जा रहा है, यह विचारणीय है। शायद इसके पीछे राजनीतिक और व्यापारिक कारण हैं। हाल की हिंसा के बाद प्रदर्शनकारियों की मांग है कि दलित सिखों को यहां से हटाकर कहीं दूर बसाया जाए। कुछ लोगों का यह मानना है कि यहां के व्यापार पर सिखों का दबदबा है, पहले तो खासी समुदाय ने इस दबदबे को स्वीकार कर लिया, लेकिन अब वह भी जागरूक हो गया है। यहां यह ध्यान देने की जरूरत है कि पंजाबी लेन शहर का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है और यहां जमीन की कीमत बढ़ गई है। दलित सिखों को यहां से हटाने की मांग शायद इसी वजह से हो रही है कि इस जमीन का व्यापारिक लाभ लिया जाए। आर्थिक लाभ के लिए दो समुदायों को लड़वाने का खेल खेला गया और राज्य सरकार लोगों से शांति की बेअसर अपील कर रही है। अभी कुछ समय पहले ही मेघालय में विधानसभा चुनाव संपन्न हुए। जिसमें मात्र दो सीटें जीतकर भी भाजपा ने सरकार बनाने की कुटिल चाल चली। नेशनल पीपुल्स पार्टी एनपीपी को १६ सीटें मिलीं, तो भाजपा ने उससे हाथ मिलाया, कुछ और दलों को साथ लिया और सरकार बनाने का दावा पेश कर दिया। जबकि २१ सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस विपक्ष में बैठने पर मजबूर हुई। राजनीतिक कद बढ़ाने के लिए भाजपा की सत्तालिप्सा किसी से छिपी नहीं है। लेकिन क्या केवल सरकार बना लेने से कोई दल बड़ा और प्रभावशाली बन जाता है। भाजपा और एनपीपी से सरकार बनाई है तो जनहित की अपनी जिम्मेदारी भी निभाए। अभी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगभग रोज ही नमो ऐप के जरिए देश के अलग–अलग वर्गों से जुड़कर अपनी नीतियों का गुणगान कर रहे हैं। भाजपा अध्यक्ष अमित शाह भी समर्थन के लिए संपर्क अभियान के तहत नामी–गिरामी हस्तियों से मिल रहे हैं। जाहिर है इनका मकसद २०१६ में सत्ता बचाना है। लेकिन इन दोनों के मुंह से यह लाइनें लिखे जाने तक शिलांग की हिंसा पर कुछ भी सुनने को नहीं मिला है। क्या इसलिए कि मेघालय में सत्ता पांच साल के लिए सुरक्षित है और पंजाब में कांग्रेस को पूर्ण बहुमत है, तो वहां सत्ता में लौटने की गुंजाइश नहींहै। बहरहाल प्रधानमंत्री उनके पूर्वोत्तर के देशवासियों के लिए फिक्रमंद हों न हों, वहां के लोगों को अपनी चिंता खुद करनी चाहिए और किसी के बहकावे में न आकर शांति बहाली की ओर बढ़ना चाहिए।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

अपने जीवन से ही खिलवाड़ क्यों

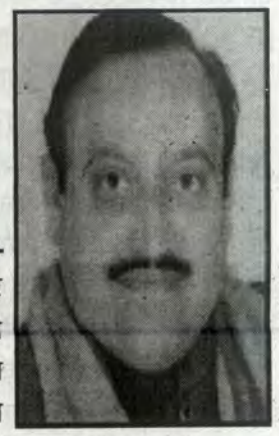

इस बार भी पूरी दुनिया ने विश्व पर्यावरण दिवस मनाकर खानांपूर्ति कर ली है। १६७४ में संयुक्त राष्ट्र संघ ने पर्यावरण की सुरक्षा और जागरूकता बढ़ाने के लिए पर्यावरण दिवस मनाने का निश्चय किया था। तब से दुनिया भर के देश इस दिन को मनाते हैं, या यूं कह लें कि मनाने की औपचारिकता निभाते हैं। अगर सचमुच पर्यावरण की सुरक्षा और उसके लिए जागरूकता फैलाने का काम होता, तो ४० सालों में धरती की शक्ल–सूरत ही और होती। अभी तो आलम यह है कि हमारे दोहन की रफ्तार के आगे एक नहीं चार पृथिवयां भी कम पड़ेंगी। विकास के नाम पर हम धरती का खजाना लूटते जा रहे हैं। हवा, पानी, नदी, पहाड़, जंगल, जानवर हर किसी का शिकार किया जा रहा है और उसके बाद पर्यावरण दिवस मनाकर मानो हम अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहते हैं। लेकिन इसका भी कोई असर नजर नहीं आ रहा है। अभी बाकी दुनिया को छोड़ें केवल भारत की ही बात करें तो हकीकत सामने आ जाएगी। भारत में इस बार विश्व पर्यावरण दिवस का कार्यक्रम आयोजित हुआ और उसकी थीम यानी केन्द्रीय विषय प्लास्टिक प्रदूषकों से निपटना रखा गया। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अपने–अपने संदेश भी दिए और पर्यावरण संरक्षण के लिए अपने इरादों को जतलाया। वैसे इस बात पर विचार करना चाहिए कि हर अवसर, हर दिवस पर राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के ट्वीटनुमा संदेशों से आखिर लाभ क्या होता है। क्या ये महज औपचारिकताएं नहीं होती हैं। घिसे–पिटे जुमलेनुमा वाक्यों को संदेश का नाम दे देने से क्या उन दिवसों की महत्ता बढ़ जाती है। क्या उनसे जनजागरूकता फैलती है। पर्यावरण दिवस पर संदेश देने के सुयोग्य अधिकारी तो वे लोग होते हैं जो सचमुच इस क्षेत्र में ईमानदारी से काम कर रहे हैं। जिन्हें अपने मकसद की फिक्र है, प्रचार की नहीं। बिहार में एक चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी हैं अनिल राम जो अब तक सड़क किनारे १५ सौ पेड़ लगा चुके हैं, ताकि राहगीरों को छाया मिल सके। इसी तरह चेन्नई में एक कैमरा सुधारने वाले कारीगर हैं जोसेफ सेकर। जो बीते १५ सालों से रोजाना लगभग ६ हजार तोतों को खाना खिलाते हैं। वे रोज ३० किलो चावल तोतों, कबूतरों, गिलहरियों के लिए डालते हैं। और अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा इसमें लगा देते हैं। जोसेफ जिस किराए के मकान की छत पर हजारों तोतों का पेट भरते हैं, उसका मालिक अब उस मकान को गिराना चाहता है और जोसेफ की चिंता यह है कि अगर ऐसा हुआ तो उन तोतों का क्या होगा। क्या अनिल राम और जोसेफ सेकर जैसे लोगों को पर्यावरण रक्षा का संदेश देने के लिए आगे नहीं बढ़ाना चाहिए। उनकी तरह बहुत से गुमनाम लोग इस धरती के प्रति अपना–अपना दायित्व निभा रहे हैं। पर्यावरण पर राजनीति, धर्म और उद्योग की मिलीभगत का ही नतीजा है कि आज भारत के बड़े शहर गंदगी में भी दुनिया में नाम कमा रहे हैं। दुनिया के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में हमारे देश के कई शहरों का नाम शुमार है। दिल्ली की हवा सांस लेने लायक नहीं है। मुंबई में पहली ही बारिश में शंघाई की हकीकत दिख रही है। गर्मियों में पर्यटकों के पसंदीदा स्थल शिमला में अपील की जा रही है कि पर्यटक यहां न आएं क्योंकि भारी जलसंकट खड़ा हो गया है। आलम यह है कि पानी की कमी के कारण स्कूलों को पांच दिन के लिए बंद कर दिया गया है। जो शिमला चीड़ और देवदारों के घने जंगल, पहाड़ी झरनों के कारण मशहूर था। उसकी ऐसी बेकद्री की गई कि वह बूंद–बूंद को मोहताज हो गया। जिस प्लास्टिक को खतरा बताकर इस बार की पर्यावरण दिवस की थीम रखी गई है, उसका प्रतिबंध के बावजूद किस तरह बेधड़क इस्तेमाल होता है, यह भी किसी से छिपा नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात में विश्व पर्यावरण दिवस का कार्यक्रम भारत में होने को बड़ी उपलब्धि बताया था। यह उपलब्धि तो तब होती, जब हम दुनिया के सामने कोई मिसाल पेश कर सकते। अभी तो यह सोचने की बात है कि क्या हम इस लायक है कि विश्व पर्यावरण दिवस मना सकें।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

गुर्दे शरीर के प्रमुख और महत्त्वपूर्ण अंग हैं। इनका कार्य रक्त में इकट्ठे हुए विषाक्त पदार्थों (जैसे यूरिया इत्यादि) को मूत्र के माध्यम से शरीर के बाहर निकालना है। गुर्दों की कार्यप्रणाली एक आश्चर्यजनक उदाहरण है, हमारे शरीर की विभिन्न क्षमताओं का। हमारे गुर्दे प्रति मिनट १२० मिली लीटर रक्तको बारीकी से छानकर उसके हानिकारक विजातीय द्रव्यों को रक्त से अलग कर मूत्र नलियों के द्वारा मूत्राशय में भेजते हैं। चौबीस घंटे में गुर्दे औसतन १७० लीटर रक्त द्रव को अपने छन्नकों जिन्हें ग्लोमेरूलाई कहते हैं द्वारा छानते हैं। इसके अलावा गुर्दे रक्त बनने की प्रक्रिया को उत्प्रेरित करने वाली हार्मोन इरिथ्रोपॉयटिन के भी प्रमुख स्रोत हैं। गुर्दे अपना कार्य करना बंद कर दें तो रोगी कुछ बहुत दिनों तक जीवित नहीं रह सकता (यदि उसे डॉयलेसिस न दिया जाए तो)।

गुर्दों की अक्षमता एक गंभीर और खतरनाक रोग

✍ डॉ. प्रेमचन्द्र स्वर्णकार

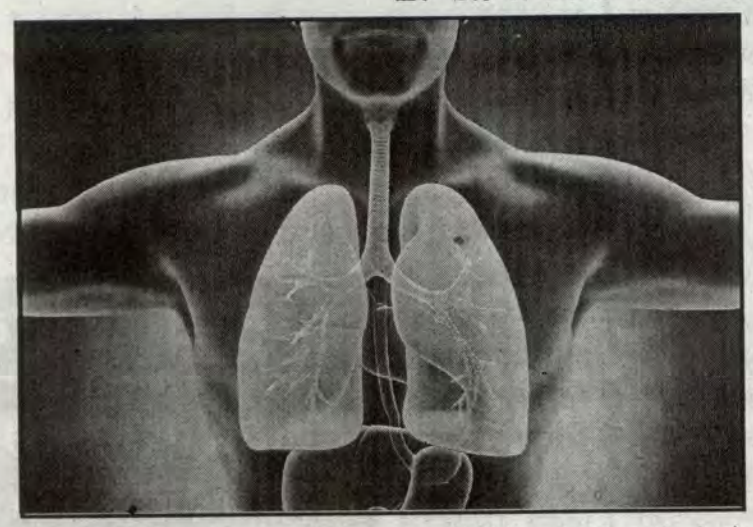

किडनी की अक्षमता क्या है?

कुछ कारणों से गुर्दे विषाक्त पदार्थों के उत्सर्जन का कार्य करने में असफल साबित होते हैं तब इस स्थिति को गुर्दों की अक्षमता या गुर्दों का फेल हो जाना कहते हैं। यह एक बहुत ही खतरनाक स्थिति होती है जिस पर शीघ्र नियंत्रण न किया जाए तो फिर गुर्दे स्थायी रूप से अपना कार्य करना बंद कर देते हैं और रोगी के जीवन को खतरा उत्पन्न हो जाता है। क्योंकि इस स्थिति में नाइट्रोजन मुक्त हानिकारक पदार्थ (जैसे—यूरिया) शरीर के बाहर नहीं निकल पाते हैं जिससे रक्त में उनका स्तर बढ़ता जाता है और यदि तुरंत इलाज न किया जाए तो रोगग्रस्त व्यक्ति गहरी बेहोशी अर्थात् कोमा की स्थिति में चला जाता है। इसके अलावा गुर्दों के कार्य न करने के कारण शरीर में सोडियम, पोटेशियम जैसे आयनों (जो इलैक्ट्रोलाइट के रूप में रहते हैं) का संतुलन एवं शारीरिक द्रवों पर पानी का संतुलन बिगड़ जाता है। जिससे शरीर में कई जटिलताएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

गुर्दों की अक्षमता या असफलता दो प्रकार की होती है—

१. गुर्दों की तीव्र अक्षमता : इस स्थिति में रोगी के गुर्दे या किडनी एकदम अपना कार्य करना बंद कर देती हैं। गुर्दों में यह खराबी एक–दो दिनों या एक सप्ताह में आ जाती है लेकिन बहुधा इस तरह की खराबी दूर भी हो सकती है। अर्थात् गुर्दे वापिस अपना कार्य दुबारा शुरू कर सकते हैं। लेकिन इसके लिए गुर्दों को अक्षम बनाने वाले कारण शीघ्र दूर करने होते हैं वरना इसके लिए डॉयलेसिस इत्यादि की जरूरत पड़ सकती है और स्थिति खतरनाक बन सकती है। फिर रोगी की जान भी जा सकती है।

कैसे होते हैं गुर्दे फेल : एक निश्चित दबाव के साथ रक्त प्रवाह गुर्दों में पहुँचता है और गुर्दों के अन्दर लाखों छोटी–छोटी बारीक नलियों के गुच्छे रक्त को छानकर और हानिकारक द्रव्य अलग कर मूत्र निर्माण करने का अपना कार्य सम्पादित करते रहते हैं। लेकिन सदमे की अथवा निर्जलीकरण की स्थिति में या फिर हृदय के अक्षम होने पर गुर्दों के लिए उचित दबाव और मात्रा में रक्त नहीं पहुँच पाता। यह स्थिति अधिक समय तक रहने से गुर्दों द्वारा रक्त छानने की प्रक्रिया में कमी आ जाती है। इस कारण मूत्र का निर्माण भी कम मात्रा में होता है या फिर पूर्णतः बंद भी हो जाता है।

रोग की पहचान : पहचान के लिए रोगी का इतिहास और लक्षणों का पता करते हैं। साथ ही कुछ पैथोलॉजीकल जाँचों के आधार पर रोग का निदान किया जाता है।

गुर्दों की तीव्र अक्षमता का निदान

- ❖ रोग और रोगी के पूर्व इतिहास की जानकारी।
- ❖ रोग के विभिन्न लक्षण और चिन्ह।
- ❖ प्रयोगशाला में रक्त में यूरिया की जाँच।
- ❖ रक्त द्रव में क्रीटिनिन की जाँच।
- ❖ मूत्र में सोडियम।
- ❖ रक्त में यूरिया और मूत्र में यूरिया का अनुपात १०:१ से अधिक होना।
- ❖ अल्ट्रासोनोग्राफी की या एक्सरे जाँच।

रोग के लक्षण : चूँकि इस रोग का एक प्रमुख कारण तीव्र संक्रमण की स्थिति भी होती है अतः इसमें रोगी का रक्तचाप भी कम हो जाता है। शरीर में पानी की कमी भी हो सकती है। रोगी के मूत्र की मात्रा अत्यंत कम हो जाती है। रोगी में खून की कमी भी हो जाती है। रक्त में यूरिया का स्तर बढ़ने से रोगी को लगातार उल्टियों की शिकायत भी होती है। उल्टियों के बाद रोगी सुस्त हो जाता है अथवा उसको हिचकियाँ भी आ सकती हैं। यदि नियंत्रण नहीं होता तो फिर रोगी गहरी बेहोशी या कोमा में चला जाता है।

जाँचें—(१) प्रयोगशाला में यूरिया एवं क्रिटिनिन की जाँचें प्रमुख रूप से रोगी के रक्त के नमूने में की जाती है। इनका स्तर अधिक होना गुर्दों के कार्य करने में खराबी या कमी आ जाने का संकेत देती है। सामान्यतः रक्त में यूरिया का स्तर १५ मि.ग्रा. से ४५ मि.ग्रा. प्रति डेसीलीटर और क्रिएटिनिन ०.५ मि.ग्रा. से १.५ मि.ग्रा. प्रति डेसीलीटर होता है।

(२) गुर्दों में पथरी का पता करने के लिए एक्सरे और अल्ट्रा सोनोग्राफी जाँचें भी करवाते हैं। आवश्यक होने पर आई.वी.पी. जाँच की सलाह दी जाती है। इन जाँचों से पेशाब में रूकावट का एवं पथरी का भी पता चल जाता है। साथ ही गुर्दों की कार्यक्षमता का भी पता चलता है।

(३) रोगी के रक्त–द्रव में इलैक्ट्रोलाइट जैसे सोडियम एवं पोटेशियम के स्तर की जाँच भी महत्त्वपूर्ण होती है। अतः चिकित्सक आवश्यकतानुसार इन्हें भी करवाते हैं। रोग में सोडियम और पोटेशियम की मात्रा बढ़ जाती है।

(४) विशेष रूप से जरूरी होने पर गुर्दे का छोटा सा भाग निकालकर प्रयोगशाला में विशेषज्ञ उसकी जाँच करते हैं। इससे कैंसर या गुर्दों की अन्य बीमारियों का पता चल जाता है। इसे गुर्दों की बायोप्सी जाँच कहते हैं।

रोग के विभिन्न कारण

गुर्दों के कार्यों में रूकावट या कमी आ जाने के कई कारण होते हैं। कुछ अन्य बीमारियाँ भी इस स्थिति के लिए उत्तरदायी होती हैं। किडनी फेल के कुछ प्रमुख कारण हैं—

१. हृदय का फेल होना।

२. सदमे की स्थिति जो खून बह जाने, पानी की कमी या अन्य बीमारियों से बनती है।

३. गुर्दों को रक्त पहुँचाने वाली धमनियों में रूकावट या संकरापन।

४. गुर्दे की सूक्ष्म नलिकाओं की बीमारियाँ या फिर ये नलिकाएँ गलत दवाओं या संक्रमणों की वजह से भी विनष्ट होने लगती हैं। इस कारण गुर्दों की कार्यक्षमता प्रभावित होती है।

५. गुर्दों में पथरी का होना गुर्दों की कार्यक्षमता कम कर सकता है।

६. गुर्दों की सूजन जैसे ग्लोमेरूलो नेफ्राइटिस इत्यादि।

७. गुर्दों की गाँठें ये गाँठें साधारण भी हो सकती हैं या कैंसर की भी हो सकती हैं।

इलाज

१. रोग का इलाज करने के पहले गुर्दों की कार्यक्षमता का अचानक कम हो जाने का कारण पता किया जाता है। इसके लिए ऊपर वर्णित जाँचों से प्रायः कारण का भी पता चल जाता है।

२. खून की कमी होने पर रोगी को रक्त चढ़ाते हैं साथ ही शारीरिक द्रवों एवं पानी का आयतन बढ़ाने के लिए नसों द्वारा ग्लूकोज का घोल देते हैं।

३. चिकित्सा विशेषज्ञ द्वारा जरूरी होने पर कार्टिकोस्टेरॉयड दवाएँ भी दी जाती हैं। साथ ही रोग प्रतिरोधक शक्ति को दबाने या कम करने वाली दवाएँ भी गुर्दों की तीव्र अक्षमता को ठीक करने में सहायक पाई गई हैं।

४. चूँकि शरीर में सोडियम और पोटेशियम रूका हुआ रहता है अतः उसको नहीं देते लेकिन ग्लूकोज का घोल रोगी जितना मूत्र त्याग करता है उससे लगभग एक लीटर अधिक नसों द्वारा देते हैं। रोगी का वजन रोज देखते हैं। हाथ, पैर और चेहरे पर सूजन होने पर या वजन बढ़ने पर उसे द्रव पदार्थ देने की मात्रा कम कर देते हैं।

५. इस रोग के रोगी में डॉयलेसिस प्रक्रिया को प्रायः नहीं अपनाते और रोगी को बिना डॉयलेसिस के ठीक करने का प्रयास किया जाता है।

६. रोगी को प्रतिदिन भोजन में ४० ग्राम प्रोटीन से अधिक नहीं दिया जाता क्योंकि प्रोटीन अधिक खाने से यूरिया इत्यादि विजातीय द्रव्यों की मात्रा भी उसके मूत्र द्वारा बाहन निकलने के कारण बढ़ जाती है। यदि रोगी को डॉयलेसिस दिया जा रहा हो तो फिर प्रोटीन की अधिक मात्रा देते हैं (७० ग्राम तक प्रतिदिन)।

(२) गुर्दों की जीर्ण अक्षमता

बीमारी के इस प्रकार में गुर्दों की क्षमता वापिस नहीं आती अर्थात् गुर्दों की कार्यप्रणाली स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त हो जाती है। लेकिन यह अवश्य होता है कि कभी गुर्दों की क्षमता थोड़ी बढ़ और कुछ समय पश्चात फिर कम हो जाए। इस तरह की बीमारी होने में एक वर्ष से लेकर कई वर्ष लग जाते हैं। शुरू में केवल रोगी के रक्त में यूरिया और

शेष पृष्ठ 11 पर

क्यों आता है अधिकमास?

✍ सुमन्त्र डोगरा

हिन्दू पचांग (कैलेण्डर) के अनुसार हर तीन वर्ष में एक माह अधिक आता है। माह अधिक होने का मतलब है एक माह का दो बार होना। इस अधिक मास को ही अधिक मास, मलमास या पुरुषोत्तम मास के नाम से भी जाना जाता है। इस वर्ष अधिक मास के रूप में ज्येष्ठ मास (१६ मई से १३ जून तक रहेगा।

क्यों आता है अधिकमास?

वशिष्ठ सिद्धांत के अनुसार भारतीय हिंदू कैलेंडर सूर्य मास और चंद्र मास की गणना के अनुसार चलता है। अधिकमास चंद्र वर्ष का एक अतिरिक्त भाग है, जो हर ३२ माह, १६ दिन और ८ घटी के अंतर से आता है। इसका आना सूर्य वर्ष और चंद्र वर्ष के बीच अंतर का संतुलन बनाने के लिए होता है। भारतीय गणना पद्धति के अनुसार प्रत्येक सूर्य वर्ष ३६५ दिन और करीब ६ घंटे का होता है, वहीं चंद्र वर्ष ३५४ दिनों का माना जाता है। दोनों वर्षों के बीच लगभग ११ दिनों का अंतर होता है, जो हर तीन वर्ष में लगभग १ मास के बराबर हो जाता है। इसी अंतर को पाटने के लिए हर तीन साल में एक चंद्र मास अस्तित्व में आता है, जिसे अतिरिक्त होने के कारण अधिकमास का नाम दिया गया है।

मल मास नाम क्यों?

माना जाता है कि अतिरिक्त होने के कारण यह मास मलिन होता है। इसलिए इस मास के दौरान हिंदू धर्म के शुभ एवं पवित्र कार्य जैसे नामकरण, यज्ञोपवीत, विवाह और सामान्य धार्मिक संस्कार जैसे गृह प्रवेश, नई बहुमूल्य वस्तुओं की खरीदी आदि आमतौर पर नहीं किए जाते हैं। मलिन मानने

के कारण ही इस मास का नाम मल मास पड़ गया है।

पुरुषोत्तम मास नाम क्यों?

अधिकमास के अधिपति स्वामी भगवान विष्णु माने जाते हैं। पुरुषोत्तम भगवान विष्णु का ही एक नाम है। इसीलिए अधिकमास को पुरुषोत्तम मास के नाम से भी पुकारा जाता है। इस विषय में एक बड़ी ही रोचक कथा पुराणों में पढ़ने को मिलती है। कहा जाता है कि भारतीय मनीषियों ने अपनी गणना पद्धति से हर चंद्र मास के लिए एक देवता निर्धारित किए। चूंकि अधिकमास सूर्य और चंद्र मास के बीच संतुलन बनाने के लिए प्रकट हुआ, तो इस अतिरिक्त मास का अधिपति बनने के लिए कोई देवता तैयार न हुआ। ऐसे में ऋषि–मुनियों ने भगवान विष्णु से आग्रह किया कि वे ही इस मास का भार अपने उपर लें। भगवान विष्णु ने इस आग्रह को स्वीकार कर लिया और इस तरह यह मल मास के साथ पुरुषोत्तम मास भी बन गया।

अधिकमास का महत्व क्यों है?

हिंदू धर्म के अनुसार प्रत्येक जीव पंचमहाभूतों से मिलकर बना है। इन पंचमहाभूतों में जल, अग्नि, आकाश, वायु और पृथ्वी सम्मिलित है। अपनी प्रकृति के अनुरूप ही ये पांचों तत्व प्रत्येक जीव की प्रकृति न्यूनाधिक रूप से निश्चित करते है। अधिकमास में समस्त धार्मिक कृत्यों, चिंतन–मनन, ध्यान, योग आदि के माध्यम से साधक अपने शरीर में समाहित इन पांचों तत्वों में संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। इस पूरे मास में अपने धार्मिक और आध्यात्मिक प्रयासों से प्रत्येक व्यक्ति अपनी भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति और निर्मलता के लिए उद्यत होता है। इस तरह अधिकमास के दौरान किए गए प्रयासों से व्यक्ति हर तीन साल में स्वयं को बाहर से स्वच्छ कर परम निर्मलता को प्राप्त कर नई ऊर्जा से भर जाता है।

अधिकमास में क्या करना उचित है

आमतौर पर अधिकमास में हिंदू श्रद्धालु व्रत–उपवास, पूजा–पाठ, ध्यान, भजन, कीर्तन, मनन को अपनी जीवनचर्या बनाते है। पौराणिक सिद्धांतों के अनुसार इस मास के दौरान यज्ञ–हवन के अलावा श्रीमद्देवीभागवत, श्रीभागवतपुराण, भविष्योत्तर पुराण, श्रीविष्णुपुराण आदि का श्रवण, पठन, मनन एवं विष्णु मंत्रों का जाप विशेष रूप से फलदायी होता है।

भाजपा कभी नहीं हटाएगी आरक्षणः अमित शाह

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने कहा है कि केंद्र सरकार आरक्षण नहीं हटाएगी और न ही किसी को ऐसा करने की अनुमति देगी। उन्होंने कहा कि संविधान में बीआर आंबेडकर द्वारा निर्धारित आरक्षण नीति को नहीं बदला जाएगा।

वीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनालय के संचालक इन्द्रदेव ने अमित शाह के वक्तव्य से असहमति प्रकट करते हुए कहा है कि डा० अम्बेडकर जाति के आधार पर आरक्षण देना पसन्द नहीं करते थे चूंकि आरक्षण केवल १० वर्षों के लिए दिया जाना था इसलिए वे सहमत हो गए थे। १० वर्षों के बाद स्वार्थी नेताओं ने इसे वोट बैंक मान लिया और आरक्षण को बार बार बढ़ा देते हैं जबकि अब इसका आधार आर्थिक कर देना चाहिए। संचालक जी ने कहा कि जो परिवार अनेकों वर्षों से आरक्षण लेकर स्मृद्ध और सम्पन्न हो गए हैं उन्हें स्वतः आरक्षण लेना त्याग देना चाहिए ताकि उन गरीब–कम शिक्षित परिवारों को भी इसका लाभ मिले जिन्हें अभी तक नहीं मिला है। प्रोन्नति में आरक्षण कतई नहीं दिया जाए अन्यथा अयोग्य/कम योग्य क्लर्क तो अधिकारी बनते रहेंगे तब अन्य जातियों के योग्य क्लर्कों को अनुसूचित जाति–जनजाति के अधिकारियों के अधीन मजबूरी में काम करना पड़ेगा। इससे जातियों में द्वेष भावना उत्पन्न होगी जो देश के लिए हानिकारक सिद्ध होगी।

वीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनालय, बुलन्दशहर

गौतम बुद्ध का संदेश मानवता के लिए अमूल्य निधि

मायावती ने बुद्ध पूर्णिमा पर देश के लोगों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। बोलीं, मानवतावाद के मसीहा तथागत गौतम बुद्ध का शांति, अहिंसा, करुणा और दया का संदेश संपूर्ण मानवता के लिए ऐसी अमूल्य निधि है जिसकी बदौलत दुनिया में शांति एवं सद्भाव का माहौल बनाया जा सकता है।

टिप्पणी

१. विश्व में १० देश एशिया में ऐसे हैं जिनका राजकीय धर्म बौद्ध धर्म है। जापान मुख्य देश है।

२. गौतम बुद्ध का जन्म लुम्बिनी में हुआ था जो नेपाल में है।

३. भारत में बौद्ध धर्मियों की संख्या एक करोड़ से कम है।

४. गौतम बुद्ध का जन्म–ज्ञान प्राप्ति तथा मृत्यु बैसाख शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को ही हुआ था।

५. बौद्ध धर्म में और कोई पर्व–त्यौहार नहीं हैं।

६. बौद्ध भी मूर्ति पूजक हैं।

७. भारत में हजारों–लाखों परिवार सनातन धर्म छोड़कर बौद्ध धर्मी हो गए लेकिन उन परिवारों में भी वही पर्व अब भी मनाए जाते हैं जिन्हें वे पहले मनाते थे।

८. मृत्यु होने पर भारत में बौद्धों का दाह संस्कार ही होता है जमीन में दफनाया नहीं जाता है।

९. म्यांमार में सादे पानी से तीन दिनों तक होली मनाई जाती है। बच्चे पिचकारियों में पानी भरकर दूसरों पर डालते हैं।

१०. सनातन धर्म के प्रचारकों को बौद्ध देशों में जाकर अपने पर्व–त्यौहारों की जानकारी देनी चाहिए।

आई०डी० गुलाटी, बुलन्दशहर

सोचिए और विचारियेगा

यह महापुरुष कौन है?

घन घोर तिमिर का वक्ष चीर भू पर उतरी थी एक किरन
सन्देश सवेरे का लाई हम करते उसका अभिनन्दन
जड़ता के पूजन अर्चन ने जब चिन्तन का अपमान किया
तूने मानव के मन में चेतन का आह्वान किया
जंजीरों से जकड़े स्वदेश को राह दिखाई थी तूने
जिसको न काल भी बुझा सका वह शमा जलाई थी तूने
घन घोर तिमिर के आगन में तू बीज ऊषा के बोता था
आवाज लगायी थी तूने जब सारा भारत सोता था
कर दिया स्वराज्य का शंख ध्वनित तूने देश की वाणी में
तप, त्याग, तेज के अंगारे पाले अनमोल जवानी में
तूने अनाथ की आह सुनी विधवाओं का क्रन्दन देखा
तूने दोपहरी के नैनों में लहराता सावन देखा
तू अगर न बनता प्रबल वेग निष्ठा स्वराज्य की आंधी का
कभी न पूर हो सकता सपना भारत में गांधी का
तू महा देश का निर्माता भारत का भाग्य विधाता है
इस धरती का कवि कोई श्रद्धा के पुष्प चढ़ाता है

हरिश्चन्द्र आर्य

आर्थिक परिदृश्य में क्रान्ति का यह दौर और सशक्त राष्ट्र बनता भारत

✍ डॉ. प्रणव पण्ड्या

आर्थिक क्रान्ति (नोटबन्दी) के परिणाम सामने दिखाई दे रहे हैं। बड़े नोट बन्द होने से आतंकवाद का अचानक दम घुटता नजर आया। कश्मीर में इन्ही से दहशतगर्दों को खुराक मिलती थी। अब वह बन्द हो गयी। स्कूलों को जलाया जा रहा था। सैनिकों पर पत्थर फेके जाते थे। प्रतिदिन सीमा पार से आक्रमण होते थे। वे बन्द हो गये। जो अनाप–शनाप अपव्यय होता था, वह रूक गया। कितनी बड़ी संख्या में काला धन पूरे देश में छाया हुआ था, नकली नगदी सर्कुलेशन में थी, उसके आँकड़े देखते हैं, तो पता चलता है कि बरबादी की ओर ले जा रहे इस राष्ट्र को मानो नयी आक्सीजन मिल गयी है। चार लाख करोड़ से अधिक की राशि बड़े नोटों के रूप में थी। बेनामी सम्पत्ति बहुतायत संख्या में बड़े शहरों में बहुत मंजिली इमारतों के रूप में छायी हुई थी। अब अचानक उस पर एक नियंत्रण–सा लग गया दिखता है। दूरगामी परिणाम और अच्छे होंगे एवं इन भवनों का उपयोग काला धन रखने वालों के द्वारा नहीं, सत्पात्रों द्वारा होगा, ऐसा लगने लगा है।

जहाँ अनर्थकारी धन नियंत्रण से बाहर होता है, वहाँ उसके दुष्परिणाम तरह–तरह के अपराध, नकली रईसी, बढ़ती विदेशी कारों, प्रदर्शनकारी अपव्यय एवं दुराचारों के रूप में दिखते हैं। धन वहीं तक उपयोगी है, जहाँ उसका सदुपयोग सुनियोजन इस देश के अंतिम आदमी तक (अन्त्योदय) होता दिखेगा पर उससे ज्यादा धन राष्ट्र को घुन की तरह नष्ट करता नजर आने लगता है। धर्म प्रधान अर्थ ही कल्याणकारी एवं मोक्षदायी होता है। अब यह सबको समझ आ रहा है। जैसे–जैसे धुंध छँटेगी, राजनीति में कण–कण में छाए भ्रष्टाचार, नोट के बदले बोट का भस्मासुरी स्वरूप दिखाई देने लगेगा। लोग स्वतः ही समझ जायेंगे कि यह आर्थिक क्रांति कितनी अनिवार्य थी। हाँ! इसने गोपनीयता को दृष्टि में रखते हुए आम आदमी (वही क्यों, सभी नागरिकों) को कष्ट दिया। समय बीतते अब स्थिति स्पष्ट हो रही है। "ड्यू" राशि अब आप आराम से बैंक या पोस्ट ऑफिस से निकाल सकते हैं। बैंकों के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूप दिखे। लेकिन अब गाड़ी पटरी पर आने में अधिक समय नहीं लगेगा।

अब आम आदमी–हर नागरिक कम्प्यूटर की दृष्टि में आ गया है। उसका आर्थिक ट्रांजेक्शन दिखाई दे रहा है। जिनके हितों को चोट पहुँची है, के कतिपय हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु चीख पुकार मचा रहे हैं, पर व्यवस्था बनते ही सब ठीक होने लगेगा, ऐसा लगता हैं। गर्भवस्था में कष्ट तो होता है, पर प्रसूता बालक के जन्म लेते ही चैन की साँस लेती है। अभी हम उसी अवधि से गुजर रहे हैं नया राष्ट्र जन्म ले रहा है जहाँ आर्थिक समता देखी जाएगी। इसे कम्युनिज्म से न जोड़े। इसके सत्परिणाम एक सामाजिक, बौद्धिक, नैतिक क्रान्ति के रूप में देखों तो समझ में आयेगा।

सामाजिक पक्ष (१) नेग, दहेज, दिखावे से भरी शादियाँ बन्द करनी पड़ेंगी। लोग पारदर्शिता देखना चाहते हैं। करोड़ों–अरबों रुपये कीधनराशि इसमें खर्च होती थी। दिखावा काले धन से ही तो होता था। अब किसी भी स्थिति में इसे बन्द होना पड़ेगा कुत्ते की पूंछ टेढ़ी ही रहती है। सीधी करने के लिए सर्जरी करनी पड़ेगी। आदतें हमारी कई वर्षो की हैं। बदलाव आयेगा ही। कोई इसमें रोक नहीं लगा पायेगा। अब शादी आदर्श शादी ही होगी। महँगे खर्चीले कार्ड, रिसेप्शन, बारातें, नाच, प्रदर्शन, फार्म हाउसों, बैंक्वेट हालों के दुरुपयोग बंद होंगे। अपने संगठन ने डेढ़ लाख से अधिक आदर्श विवाह नाम मात्र की लागत में विगत पचास वर्षो में कराये हैं। अब इनका प्रचलन तेजी से बढ़ेगा। बची राशि राष्ट्र के सामाजिक विकास में प्रयुक्त होगी। शादियों में पार्टी में सार्वजनिक भोज, शराब आदि का उपयोग इतिहास बन जाएगा। पढ़े–लिखे युवा अब आदर्श विवाहों को ही अपनायेंगे। गायत्री परिवार इसके लिए संघर्षात्मक–प्रचारात्मक आंदोलन चलाएगा। यह अब और भी सरल हो जायेगा।

(२) सबसे कड़ा प्रकार मद्य निषेध, अन्य सभी तरह के नशों के बन्द होने के रूप में देखा जायेगा। समझदारी जीतेगी और इनका दुरुपयोग अब रुकेगा। यह मानवी मन का दुर्बल पक्ष है, जो नशे के रूप में पलायन की ओर प्रेरित करता है। कितनी दुर्घटनाएँ इससे होती हैं, लोग जानते हैं। नशे में व्यक्ति दुराचार करता है। जानवर बन जाता है। न उसे नीति दिखाई देती है, न कोई होश ही होता है। गैंग रेप में जिस तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है, वह चौंकाने वाली है। नशे ने घर तो बर्बाद किए ही हैं, नारी का बुरी तरह शोषण भी किया है। कई भोली–भाली बलात्कार की शिकार नारियों ने आत्महत्याएँ भी की हैं। नशें ने समाज का एक बड़ा अंधकारभरा, वीभत्स दुराचारी स्वरूप दिखाया है। अब समय आ गया है कि पूरे देश में पूरी तरह नशाबन्दी लागू हो। शराब, नशीले पेय, तम्बाकू, गुटका, विभिन्न तरह की ड्रग्स सभी पर नियंत्रण लगे। यह सब अब ईमानदारी से कमाने वाली आय से नहीं होगा। कानून का शिकंजा इनको भी कसेगा एवं देखते–देखते आदमी की आदतें बदलने लगेंगी। नशा ही सभी तरह के दुराचारों–अपराधों–दुर्घटनाओं और घर की बर्बादियों की जड़ है, यह हमें समझना होगा। बड़े व्यापक स्तर पर जन जागरूकता फैलानी होगी।

(३) अनाप–शनाप काले धन ने अयाशी को बढ़ावा दिया। गुण्डागर्दी बढ़ी एवं शोषण बढ़ा। बाहर के दुश्मनों से तो हम लड़ लेंगे पर उस अंदर की असुरता से तो हमें ही मोर्चा लेना होगा। अब विलासितापूर्ण जीवन हिकारत की निगाह से देखा जायेगा। इसमें महँगी कारें, महँगे शौक, बड़े–बड़े होटलों में खाना भी शामिल है। १९९० के बाद आर्थिक खुलापन आया। कलर टी.वी. बड़ी महँगी कारों के अलावा कई तरह के गैजेट्स देश में आ गये। कारों की बढ़ोतरी की कोई सीमा नहीं थी। एक घर में सात–सात कारें, हर सदस्य के लिए अलग गाड़ी होगी, तो ट्रेफिक जाम तो होंगे ही। कार रखने की जगह भी नहीं होगी। अब इस पर नियंत्रण लगाना होगा। कार–पूल (Car pool) का उपयोग जन–जन करने लगे, वाहनों पर शासन नियंत्रण लगा दे एवं स्व–घोषणा द्वारा वे अपने वाहन अब धीरे–धीरे समाज के विभिन्न प्रकल्पों के लिए देने लगें तो लगेगा कि परिवर्तन आ रहा है। पर्यावरण में हो रहा प्रदूषण भी बचेगा। पेट्रोल–डीजल की खपत में कमी आयेगी और राष्ट्र का राजस्व बचेगा। बहुतों को मालूम नहीं है कि पेट्रोडालर कितनी महँगी कीमत से हमें अपने वाहनों का ईधन देते हैं। इसके लिए कई गायों कटती हैं, जिनका मांस निर्यात करके हम पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स आयात करते हैं। अब प्राकृतिक गैस पर ही आश्रित रहना होगा। ऊर्जा के नये विकल्प खोजने होंगे, जिस पर शोधकार्य हो रहा है।

हमारे मकान ३ बी एच के, ४ बी एच के हों जरूरी नहीं। हम थोड़े में भी संतोष कर सकते हैं इससे अनावश्यक शहरीकरण बचेगा, पानी, विद्युत सभी की बचत होगी। शासन को इस सम्बन्ध में भी नीति बनानी होगी और हो सके तो बहुमत से अध्यादेश पास करना होगा। इन सबके कारण सरकारी, गैस सरकारी दोनों स्तर पर भ्रष्टाचार बढ़ा है। भ्रष्टाचार उस धन को जमा करता है जो अनीति से उपार्जित है, साथ ही वह अगले दिन मिट्टी बन जाने वाला है। भ्रष्टाचार पर कड़ा अंकुश, उस पर बड़ी–से–बड़ी सजा अब समय की माँग है।

(४) शिक्षण संस्थानों में विगत दो दशक में बड़ी तेजी से बढ़ोतरी हुई है, पर शिक्षा का स्तर उतना नहीं बढ़ा। हमारे देश में प्रतिभा की कमी नहीं किन्तु शिक्षा उन्हीं के लिए है, जिनके पास अनाप–शनाप और किसी भी प्रकार से कमाया गया पैसा है। क्या आपको लकवा नहीं मार जायेगा? जब आपको पता लगेगा कि एक आर्थोपेडिक सर्जन बनने के लिए शिक्षण संस्थानों में एक करोड़ रुपये तक की ब्लैक–मनी अब तक दी जाती रही है। यह कहाँ से आयेगी? ब्लैक से! अब वह रास्ता बंद हो गया तो ये नीमहकीम जो हड्डी तोड़ रहे थे, अब क्या करेंगे? इनको, इनके माता–पिता को, मेडिकल कॉलेजों को चलाने वाले निजी संस्थानों को अब बदलना ही होगा। शिक्षा की दुकानें जगह–जगह लगी दिखती हैं। ये क्या परिवर्तन लायेंगी? शिक्षा चरित्र निर्माण करती है। पर जिनकी जड़ें ही भ्रष्टाचार के गंदे नाले में हों, वे क्या चरित्र

शेष पृष्ठ 10 पर

जिन्नाह के जिन्न से नही जिन्नाहवादी सोच से बचो

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

एक बार नेहरू जी ने कहा था कि एक क्या एक हजार जिन्नाह भी पाकिस्तान नही बना सकते। तब जिन्नाह बोले थे कि पाकिस्तान का जन्म तो तभी हो गया था जब पहले हिन्दू का धर्म परिवर्तन करके उसे मुसलमान बना दिया गया था। अतः उनकी भविष्य में भारत को मुगलिस्तान बनाने की सोच व दूरदर्शिता स्पष्ट थी। जबकि हमारे नेतागण धर्म निरपेक्षता की ओढ़नी में इस्लामिक मानसिकता से दबते हुए व परिस्थितियों से समझौता करते हुए आत्मसमर्पण करते आ रहे हैं। हम कभी मुस्लिम तुष्टिकरण की योजनाएं बनाकर उन पर भारी राजकोष व्यय करते हैं तो कभी उन्हें और अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए मुस्लिम सशक्तिकरण का अभियान चला कर आत्मसंतुष्ट होना चाहते हैं । परंतु अज्ञानवश इस सबसे हम आत्मघात की ओर बढ़ रहें हैं। इसी का परिणाम है कि जिन्नाह जैसे देशद्रोही को अपना आदर्श मानने वाला समाज उनकी विभाजनकारी नीतियों को आगे बढ़ाते हुए आज उसी राष्ट्र को जला रहा हैं जहां की माटी में वे सब पले–बढ़े हुए हैं। जिसके अन्न–जल ने उन्हें सीच कर भारत जैसे एक प्रमुख राष्ट्र का सम्मानित नागरिक बनाया है। क्या ऐसे समाज को भारत भूमि के लिये उसकी संस्कृति व आदर्शों के प्रति कोई सम्मान नहीं होना चाहिये? इस सत्य को मानना अनुचित नही कि मोहम्मद अली जिन्नाह ही पाकिस्तान के जनक कहलाये जाते है। उन्होंने मुस्लिम लीग के २२ मार्च १९४० के लाहौर अधिवेशन में द्विराष्ट्रवाद का सिद्धांत प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा भारत में हिन्दू–मुसलमान दो जातियां नही अपितु दो राष्ट्र है, क्योंकि दोनों का खान–पान , रीति –रिवाज व रहन–सहन बिल्कुल भिन्न है। दोनों न सहभोज कर सकते है और न ही दोनों सहविवाह कर सकते। यहां तक कि हिन्दू का महापुरुष मुसलमान के लिए खलनायक है व मुसलमान का महापुरुष हिन्दू का खलनायक है। इसलिए भारत को हिन्दू भारत व मुस्लिम भारत के रूप में विभाजित कर देना चाहिये। २३ मार्च १९४० को इसी अधिवेशन में पाकिस्तान संबंधित प्रस्ताव पारित कर दिया गया, जिसके तुरंत बाद मुस्लिम लीग के नेताओं ने जहां तहां भी उनसे हो सका हिन्दुओं व सिक्खों की हत्या, लूटमार व बलात्कार आदि आरम्भ कर दिये। ढाका, मुंबई व अहमदाबाद आदि में तो बल्वे अधिक भयंकर हुए थे।

इतिहास साक्षी है कि जिद्दी जिन्नाह को मनाने के लिए महात्मा गांधी सन १९४४ में दिनांक ९ से २७ सितंबर तक निरन्तर १९ दिन जिन्नाह की कोठी पर गए थे और उनको कायदे–आजम (सबसे बड़ा आदमी) कहते हुए संबोधित करके गांधी जी ने मुस्लिम–तुष्टीकरण की सारी सीमाएं लांघ दी थी। परंतु जिन्नाह अपनी जिद्द पर अड़े रहे। यह सत्य है कि पूर्व में जिन्नाह कट्टरपंथी नही थे परंतु सत्ता पाने की होड़ने और नेहरू आदि के व्यवहारों ने उन्हें मुस्लिम लीग का नेता बना कर स्वतः इस्लामिक कट्टरता के मार्ग पर चलने को विवश कर दिया था। यह भी अवश्य स्मरण होना चाहिये कि १९ अगस्त १९४९ को जिन्नाह ने मुस्लिम लीग द्वारा सीधी कार्यवाही (डायरेक्ट एक्शन) का आदेश देकर हिन्दू व सिक्खों को मारने का आह्वान किया था। जिसके कारण बंगाल की मुस्लिम लीग सरकार ने कलकत्ता की सड़कों को हिंदुओं के रक्त से लाल कर दिया। नोआखाली में तो हिंदुओं की हजारों महिलाओं व लड़कियों का बलात्कार व अपहरण हुआ था। अखंड भारत के पश्चिमी पंजाब में हिन्दू व सिक्खों के लहू की नदियां बही थी। परिणाम स्वरूप इन भयावह हत्याकांडों ने देश को एक खतरनाक स्थिति मे पहुँचाते हुए दर्दनाक मोड़ देने से भारत को विभाजन की त्रासदी झेलनी पड़ी।

क्या किसी ने यह नही सोचा कि १९४७ में भारत विभाजन की भूमिका के उत्तरदायी जिन्नाह व गाँधी एवं नेहरू के अड़ियल रुख के कारण हुए विभाजन की दुःखद त्रासदी में लगभग २.५ करोड़ लोग बेघर हुए, १०–१५ लाख निर्दोष मारे गए व लगभग हजारों अबलाओं का बलात्कार हुआ और हजारों लोगों को अपना धर्म त्यागने का पाप झेलना पड़ा। यह केवल भारत के इतिहास की नही बल्कि मानव इतिहास को कलंकित करने वाली एक बड़ी दुर्घटना घटी थी। कायदे आजम कहलाने वाले जिन्नाह की ही योजना थी कि पाकिस्तान बनने के डेढ़ माह बाद ही कश्मीर के मीरपुर, मुजफराबाद आदि बीसियों शहरों और गावों में (जो अब पाक अधिकृत कश्मीर में हैं) हिंदुओं का नस्संहार करवाया गया। उस समय जिन्नाह ही पाकिस्तान के गवर्नर जनरल थे। धर्म के नाम यह सब क्यों हुआ और आगे भी होता जा रहा है क्योंकि हमको अपने हिन्दू धर्म की तेजस्विता का ज्ञान ही नही हैं और न ही हमारा कोई नेता इतना सक्षम है कि वह शुद्ध रूप से संविधान के अनुसार धर्मनिरपेक्षता का पालन कर सकें और भोली–भाले राष्ट्रवादियों की अस्मिता की रक्षा कर सकें। वर्षो पूर्व जब आडवाणी जी ने पाकिस्तान जाकर जिन्नाह को धर्म निरपेक्ष कहा और जसवंत सिंह ने एक पुस्तक लिखकर जिन्नाह का पक्ष रखा तो संघ परिवार सहित भाजपा ने उन्हें शीर्ष नेतृत्व से अलग–थलग कर दिया था। ये दोनों नेता आज तक उस राष्ट्रीय अपमानजनक कृत्य का परिणाम भुगत रहे हैं।

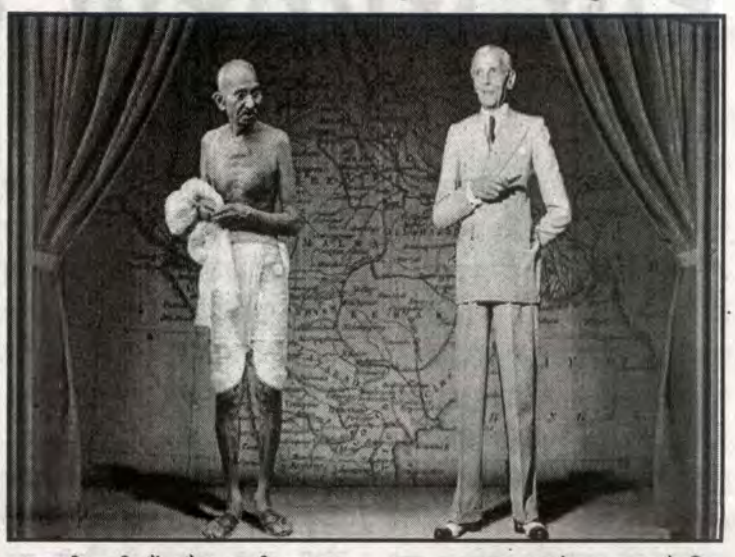

यह अत्यंत दुःखद है कि देश में समान नागरिक सहिंता, अनुच्छेद ३७० व ३५ (ए), विस्थापित कश्मीरी हिंदुओं, बांग्ला देशी एवं रोहिंग्या मुसलमान घुसपैठियों व राम जन्मभूमि मंदिर की वर्षो पुरानी राष्ट्रीय समस्याओं पर सकारात्मक जागरण अभियान की प्राथमिक आवश्यकता के स्थान पर अलीगढ़ मुस्लिम विश्विद्यालय में जिन्नाह के चित्र को लेकर विवाद ७० वर्ष बाद अब क्यों उछाला जा शेष पृष्ठ 11 पर

भारत में भाषा का मसला

कुछ विद्वतजनों की मान्यता है कि हिन्दी भाषा को भारत में देशव्यापी भाषा बनाने का श्रेय हिन्दी फिल्मों को जाता है। फिल्मी दुनिया की अधिकांशतः अतिभौतिकता, अनैतिकता और भारत में पाश्चात्य लंपटता के विस्तार में अग्रणी भूमिका होने के बावजूद कुछ हद तक इस विचार को स्वीकार किया जा सकता है कि फिल्मों के माध्यम से हिन्दी का संपूर्ण भारत में प्रसार हुआ है। हिन्दी फिल्में पूरे देश में और अब तो विदेशों में भी खूब देखी जा रही हैं। हिन्दी फिल्मों के गाने देश, विदेश सभी जगह लोकप्रिय हैं। दक्षिण भारत में हिन्दी भले ही ना चलती हो पर हिन्दी गाने खूब चलते हैं। पर फिल्म जगत में भी परिदृश्य अब कुछ बदला हुआ है। एक समय था जब हिन्दी फिल्मों के निर्माता, निर्देशक, अभिनेता, अभिनेत्री, गीतकार, संगीतकार सब भारतीय होते थे। जिनके दिल में भारत था और वे हिन्दी की भी अच्छी जानकारी रखते थे लेकिन अब वह दौर नहीं रहा। आज निर्माता, निर्देशक, अभिनेता, अभिनेत्री, गीतकार, संगीतकार ज्यादातर भारतीय न होकर इंडियन हैं कहने को भारतीय लेकिन विदेशों में पले–बढ़े–पढ़े उनके दिल में भारत नहीं अमेरिका बसता है। हिन्दी फिल्मों में हिन्दी संवाद बोलना पड़ता है इस कारण वह कुछ हद तक हिन्दी समझ और बोल तो लेते हैं लेकिन देवनागरी लिपि पढ़ने की योग्यता उनमें नहीं है। देश, भाषा, लिपि के प्रति हमारी चिंताओं से उन्हें कोई सरोकार नहीं है। उन्हें सरोकार है तो सिर्फ अपनी तगड़ी कमाई से। उन्हें हिन्दी फिल्म की कहानी रोमन लिपि में लिखकर दी जाती है तब वे पढ़ पाते हैं। उन्हें हिन्दी के संवाद रोमन लिपि में लिख कर दिए जाते हैं तब वे समझ और बोल पाते हैं। वर्तमान में जो हिन्दी फिल्में बनाई जा रही हैं वे भारत को ध्यान में रखकर नहीं विदेशी संस्कृति, विदेशी दर्शकों को ध्यान में रखकर बनाई जा रही हैं। बीच–बीच में अंग्रेजी के शब्द और वाक्य, संवाद और गीतों में धड़ल्ले से घुसाए जा रहे हैं। हमारी युवा पीढ़ी इस घालमेल को बड़े प्रेम से ग्रहण कर रही है क्योंकि ये फिल्में युवाओं के मनमौजी, उच्छृंखल, अनैतिक, लंपट आचरण के पक्ष में सामाजिक वातावरण का निर्माण करती हैं। कहना ना होगा कि हमारी युवा पीढ़ी के आदर्श फिल्मी अभिनेता, अभिनेत्री हैं। वे उनके जैसे ही बनना चाहते हैं, उनके जैसे ही जीना चाहते हैं और उनके जैसे ही मरना भी चाहते हैं। फिल्मी लोगों की तरह ही हमारे देश के युवा वर्ग को अपने देश, अपनी भाषा, अपनी लिपि की कोई चिंता नहीं है। कुल मिलाकर हिन्दी फिल्में अब हिन्दी की नहीं अंग्रेजी की वाहक बनती जा रही हैं। इस से भी आगे बढ़कर तथ्य यह है कि देश में अब हिंदी फिल्मों के दर्शक कम हो रहे हैं और विदेशी फिल्मों के दर्शक बढते जा रहे हैं। हिन्दी फिल्मों की तुलना में विदेशी फिल्में कमाई भी अधिक कर रही हैं। यही हाल संचार के अन्य माध्यमों यथा दूरदर्शन, समाचार पत्र, पत्रिका, उपन्यास आदि के क्षेत्र में भी है क्योंकि अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित हमारा युवा दिल से अंग्रेजी के करीब है। अंग्रेजी में और अंग्रेज़ी वालों से व्यवहार करते हुए वह बहुत आत्मविश्वस्त रहता है। भारतीय भाषाओं में और भारतीय भाषा भाषियों से व्यवहार करते हुए उसे हीनताबोध सताता है, लज्जा आती है। हम हिंदी प्रेमियों के पास इस हीनताबोध का कोई उपचार है?

विजयलक्ष्मी जैन

राष्ट्रीयकरण का विकल्प श्रमीकरण

✍ कीर्ति प्रकाश रस्तोगी

ईश्वर ने मानव को स्वतन्त्र रहने की रुचि प्रदान की और इसलिये सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव का कुछ स्वभाव ही ऐसा बन गया है कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वतन्त्रता का और जब जब विकृति आई तब तब स्व्च्छन्दता का भोग करने का आदी हो गया है। इसी मानव व्यवहार के अन्तर्गत मौलिक रूप से 'स्वतन्त्र व्यापार' की व्यवस्था को जन्म मिला इसी व्यवस्था के माध्यम से मानव ने संसार में जगह जगह व्यपारिक समृद्धि प्राप्त की। जब स्वतन्त्रता का भोग करते करते 'स्वतन्त्र व्यापार पद्धति' की सीमायें टूटी और मानव स्वच्छन्दता की ओर बढ़ने लगा तब संसार के अर्थशास्त्रियों ने इस 'स्वतन्त्र व्यापार पद्धति' पर कुछ आवश्यक नियन्त्रण लागू करने की दिशा में विचार प्रारम्भ किया। विचार मंथन चलते चलते अन्त में मानव ने एक नवीन अर्थ पद्धति का आविष्कार कर ही तो डाला। स्वतन्त्र व्यापार व्यवस्था में उत्पादन के समस्त उपकरण व्यक्तियों के नियन्त्रण में रहते थे और व्यक्ति जैसा चाहता था वैसा उन उपकरणों का उपभोग करता था। क्या उत्पादित किया जाये, 'किस पद्धति से उत्पादित किया जाये–इन प्रश्नों का निर्णय व्यक्ति ही लेता था। इस प्रकार के निर्णय लेने में व्यक्ति का स्वार्थ कार्य करता था कि उसका लाभांश कैसे बढ़े चाहे फिर समाज को कितनी ही हानि क्यों न उठानी पड़े, चाहे कितने कष्टों का सामना क्यों न करना पड़े। स्वतन्त्र व्यापार की इस विकृति के कारण ही नवीन अर्थ पद्धति में उपर्युक्त निर्णयों को लिये जाने की व्यवस्था को बदला गया। इस नवीन अर्थ पद्धति का नाम समाजवाद दिया गया। इसका अर्थ पद्धति का नाम समाजवाद दिया गया। इसका अर्थ हैं कि उत्पादन के समस्त उपकरण समाज द्वारा नियन्त्रित हो और उपर्युक्त निर्णय व्यक्ति द्वारा न लिये जा कर समाज द्वारा लिये जायें। इस प्रकार अर्थशास्त्रियों ने एक ऐसी अर्थ–व्यवस्था को जन्म दिया कि जिसमें स्वतन्त्र व्यापार पद्धति की विकृति का अन्त हो गया।

समाजावाद कल्पना के क्षेत्र में बड़ा सुन्दर शब्द है, और यह शब्द कल्पना में एक बहुत ही सुन्दर एवं वैज्ञानिक अर्थ–व्यवस्था की और इंगित करता है। वह कितनी सुन्दर अर्थ–व्यवस्था होगी, जहाँ अर्थ के क्षेत्र में समाज का पूर्ण नियन्त्रण होगा, मानव शोषण समाप्त होगा, और जिसमें समाप्त होगा चन्द हाथों में पूँजी का केन्द्रीयकरण। सुन्दर ही नहीं यह व्यवस्था तो स्वर्ग को पृथ्वी पर लाने की पात्रता रखती है। इसी आशा से इस पद्धति के अनुसार कई देशों की अर्थ–व्यवस्थायें आती गयी।

जब यह पद्धति व्यवहार में लायी गयी तब इसकी बहुत सी कमियाँ सामने आयीं जिन्हें निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है:

१. शासक वर्ग द्वारा शोषण–व्यावहारिक क्षेत्र में अर्थ पर सामाजिक नियन्त्रण न रहकर शासक वर्ग का नियन्त्रण होने लगा। इस प्रकार से सत्तारूढ़ वर्ग अपने वर्ग स्वार्थ के लिये शेष समाज का शोषण करने लगा। जिस प्रकार से एक समय में योगोस्लेविया की सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था का नियन्त्रण समाजवादी शक्तियों के हाथ के आने के बाद, समाजवादी देश रूस से प्रेरणा लेने के कारण शासक वर्ग द्वारा रूस की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये योगोस्लेविया की अर्थ–व्यवस्था का उपभोग किया जाने लगा। तात्पर्य यह है कि सत्तारूढ़ वर्ग की इच्छा पर ही सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था चलने लगी। अत: यह स्पष्ट हुआ कि इस नवीन पद्धति से स्वतन्त्र व्यापार का दोष दूर नही हो सका। यदि दूसरे दृष्टिकोण से देखें तो भी यह स्पष्ट समझ में आ जायेगा। यह मनुष्य का एक स्वभाव है या यों कहा जाय कि यह एक कमजोरी है कि जब उसके पास शक्ति का केन्द्रीयकरण होगा तब उसके द्वारा उसका दुरुपयोग अवश्यंभावी है फिर चाहे वह व्यक्ति हो अथवा कुछ व्यक्तियों का एक वर्ग सेन्ट्रल प्लानिंग स्थारिटीम–मार्क्सवाद। इस प्रकार से अर्थ के सामाजीकरण ने समाजवाद के स्थान पर वर्गवाद को जन्म दिया जिससे मूल रोग तो दूर हुआ नहीं अन्य रोग उत्पन्न हो गयें।

२. व्यक्तिगत प्रेरणा का ह्रास: इस पद्धति के अमल में लाये जाने पर यह अनुभव में आया कि इस पद्धति ने मानव की मूल प्रेरणा

को ही कुठाराघात कर दिया व्यक्तिगत प्रेरणा समाप्त प्राय दिखने लगी। मानव की इस व्यक्तिगत प्रेरणा के ह्रास के कारण रूस जैसे घोर समाजवादी देश को भी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा यहाँ तक कि उसे, अपने देश में सम्पूर्ण अर्थ–नियन्त्रण लागू करने के बाद जब यह कमी अनुभव में आयी, तब समाजवाद के नियमों को ढीला करना पड़ा। उदाहरण के तौर पर अक्टूबर क्रांति के बाद शासनाध्यक्ष "लेनिन" ने उन कारखानों को राज्य नियन्त्रण से मुक्त कर दिया जिनमें २० अथवा २० से कम मजदूर काम करते थे। साथ–साथ बैंक के व्यक्तिगत खातों से सम्बन्धित नियमों को भी पर्याप्त ढीला करना पड़ा। इसी प्रेरणा की कमी के कारण सामूहिक खेती किये जाने के बाद ही खाद्यान्न के उत्पादन लक्ष्य से बहुत दूर रहे और रूस को खाद्यान्न के लिए अन्य देशों के सामने हाथ पसारना पड़ा। किसी समय रूसी प्रधानमंत्री "श्री खुश्चेव" ने एक बार दबी जबान में इस तथ्य को माना भी कि समाजवाद में व्यक्तिगत प्रेरणा का ह्रास होता है जिसके कारण ही खाद्यान्न के उत्पादन में गिरावट आयी।

३. व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का ह्रास: समाजवाद और व्यक्ति स्वातन्त्रय दो आपस में विरोधी तत्त्व स्पष्ट अनुभव में आयें। इस व्यक्तिगत स्वातन्त्रय के ह्रास ने तो मनुष्य को जीवन के समस्त पहलुओं में सत्ता का दास ही बनाकर रख दिया। मानव सत्ता की मशीन का एक पूँजी मात्र बन गया। मानव की सारी प्रेरणायें, सारी भावनायें, सारी संवदेनाएँ एवं विचार समाप्त प्राय हो गये। मानों विकास की दिशा ही रुक गई। मनुष्य के निर्णय का कोई महत्त्व ही नहीं रह गया। समाजवाद की यह निहित कमी है। जहाँ समाजवाद होगा वहाँ व्यक्ति स्वातन्त्रय का ह्रास अवश्य होगा।

स्वतन्त्र व्यापार की विकृति तथा समाजवादी व्यवस्था द्वारा जन्य अन्य रोगों को दूर करने हेतु अर्थशास्त्रियों ने एक अन्य अर्थ–व्यवस्था को जन्म दिया जिसे संसार ने मिश्रित अर्थ–व्यवस्था ने नाम से जाना।

इस नवीनतम व्यवस्था का प्रयोग बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रगतिशील देशों द्वारा किया जा रहा है। इस व्यवस्था के अन्तग्रत आर्थिक क्षेत्र में सत्ता का हस्तक्षेप उतना ही रखा गया जितने की नितान्त आवश्यकता समझी गयी। बहुत महत्त्वपूर्ण उद्योगों को ही सत्ता द्वारा संचालित करने की व्यवस्था की गई–जैसे रेल उद्योग, डाक तार उद्योग इत्यादि। जो उद्योग व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूहों द्वारा चलाये जा सकते हैं उन उद्योगों में बिलकुल हस्तक्षेप न करने की अथवा आवश्यकता पड़ने पर, कुछ नियन्त्रण लागू किये जाने की व्यवस्था की गयी–जैसे अधिकोषण (बैंकिग) उद्योग में महत्त्वपूर्ण बात नहीं है कि वह उद्योग किन–किन व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूहों के हाथ में है अथवा शासन द्वारा नियन्त्रित है पर महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सच्ची लोकतान्त्रिक पद्धति के आधार पर यह उद्योग पनपे और इस पर विनियोग नियन्त्रण ऋण नियन्त्रण, तथा रिजर्व बैंक द्वारा निक्षेप नियन्त्रण (डिपाजिट) बहुत महत्त्वपूर्ण बात है जिसके न होने पर अर्थ–व्यवस्था की तुला में गड़बड़ी उत्पन्न हो सकती है। केवल राष्ट्रीयकरण व्यावहारिक दृष्टि से सरकारीकरण अथवा नौकरशाहीकरण से उद्योग का कल्याण नहीं होने वाला। यह करने से तो समाजवाद अन्य रोग उद्योग को ग्रसित कर लेंगें जिससे लाभ के बदले हानि की अधिक सम्भावना है। इससे न कर्मचारियों का लाभ, न समाज का लाभ और न अर्थ–व्यवस्था का लाभ।

इसी प्रकार से एक अन्य आधुनिक मौलिक विचारधारा भी आर्थिक जगत में विकसित हुई है जिसका नारा इस प्रकार से है–(Nationalise the labour, Labourise the indus try & Industrialise the nation) अर्थात् श्रम का राष्ट्रीयकरण, राष्ट्र का औद्योगीकरण, उद्योग का श्रमीकरण। इस मौलिक विचारधारा में उद्योगों का श्रमीकरण अधिकोलोकतन्त्रान्तिक एवं सर्वजन सुखाय समझा गया। उद्योगों के श्रमीकरण की कल्पना इस रूप में है। प्रत्येक उद्योग एक स्वायत केन्द्रीय निकाय द्वारा नियन्त्रित हो जिसकी रचना निम्न प्रकार से की जा सकती है:

एक सदस्य–उद्योग में लगे कर्मचारियों द्वारा निर्वाचित हो। एक सदस्य–जनता के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाला हो जिसका उस उद्योग से प्रत्यक्ष सम्बन्ध हो जैसे जीवन बीमा उद्योग के निकाय में पॉलिसी–होल्डरों का प्रतिनिधित्व। एक सदस्य–जनता का प्रतिनिधि हो अर्थात् संसदसदस्य हो। इस प्रकार से हम देखते हैं कि यह निकाय ही महत्त्वपूर्ण हैं, जो समस्त जनता की भावनाओं का आदर करते हुये पूणरूप से सक्षम हैं। इस निकाय द्वारा नीति सम्बन्धी निर्णय जनता के

शेष पृष्ठ 11 पर

क्या संस्कृत पढ़ने से अर्थार्जन नहीं हो सकता?

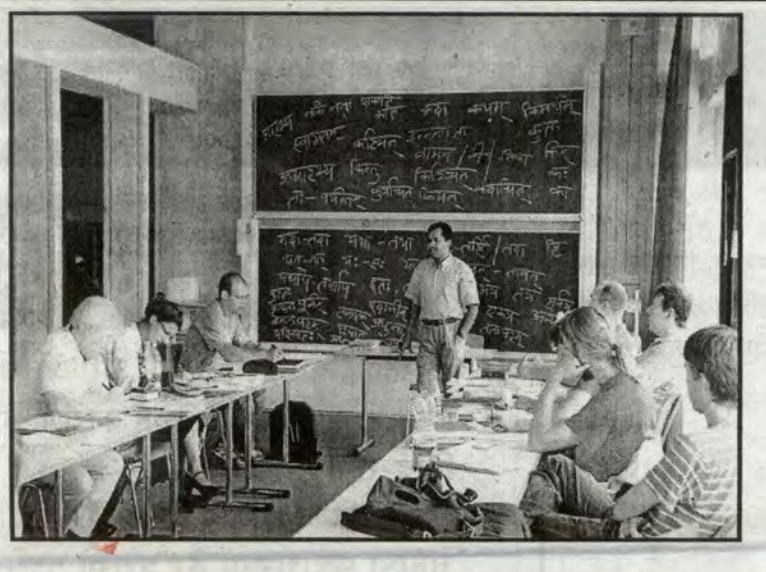

समाज में एक भ्रम फैलाया गया है कि संस्कृत पढ़ने से छात्र अर्थार्जन नहीं कर सकता। उसे केवल शिक्षक बनना पड़ता है या पुरोहित। मेरा इस प्रकार की धारणा रखने वालों से प्रश्न है कि जो संस्कृतेतर छात्र बीए, बी.कॉम, बीएससी होते है उनके लिए कौन सी नौकरी बाट जोह रही है?

हमारे देश में स्नातक उपाधी को आधारभूत उपाधी माना जाता है। उसकी प्राप्ति के पश्चात् आप प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण कर नौकरी पा सकते है। जो संस्कृत विषय लेकर स्नातक बनते है उनके लिए किस प्रतियोगी परीक्षा का द्वार बंद है? उत्तर आयेगा किसी का नहीं। स्नातक बनने के पश्चात् अधिकतर छात्र प्रबन्धन शास्त्र (एमबीए) पढ़ते है। क्या संस्कृत से स्नातक प्रबंधन शास्त्र नहीं पढ़ सकते? संस्कृत के छात्र यूपीएससी परीक्षा उत्तीर्ण करते है। चोटीपुरा गुरुकुल की कन्या यूपीएससी परीक्षा में तृतीय स्थान पर आयी। लखनऊ के संस्कृत परिवार का युवक आईएएस इसी वर्ष हुआ। बहुत से छात्र यूपीएससी परीक्षा के लिए संस्कृत विषय लेते है यह मेरा अनुभव है। आईआईटी या अन्य अभियन्त्रण शास्त्र पढ़े छात्र भी पाठ्यक्रम के विषयों को छोड़ कर आईएएस बनने के लिए संस्कृत विषय चुनते है और संभाषण सीखने के लिए संस्कृतभारती के पास आते है। आश्चर्य तब हुआ जब एक मुसलमान बीटेक की हुई छात्रा संस्कृत सीखने संस्कृतभारती की ओर से संचालित संवादशाला में पहुंची। वहा १४ दिन का आवासीय शिविर होता है। यह यूपीएससी की परीक्षा देने वाली थी।

विश्वभर में योग का प्रचलन बढ़ रहा है यह सर्वविदित है। किन्तु अधिकतम लोगों को केवल आसन और प्राणायाम का कुछ हिस्सा ज्ञात है। अष्टांग योग की ओर अब कुछ लोक (विशेषकर विदेशी) उन्मुख होने लगे है। उन्हें पढ़ायेगा कौन? जो योग दर्शन का ज्ञातज्ञ है वही न? क्या विश्व की जिज्ञासा शांत करने के लिए हमारे पास योगदर्शन के पर्याप्त शिक्षक है? इस वर्ष भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा पहला प्रयास किया गया। योग दिन के निमित भारत से कुछ योग दर्शन जानने वाले विद्वानों को विदेशों में भेजा गया। यह मांग बढ़ने वाली है। विश्व के कुछ ही देश आंग्ल भाषा समझते है। शेष सब अपनी अपनी भाषा में पढ़ते है, जैसे–जर्मन, फ्रेंच, रशियन, जापानी, चीनी, हीब्रू इत्यादि। इसलिए इन देशों में योगदर्शन पढ़ाना है तो पहले संस्कृत पढ़ानी होगी, कारण आन्गल भाषा से काम नहीं चलेगा। विश्व की सभी भाषाए दार्शनिक पढ़े यह तो संभव नहीं है। वैसे भी योगशास्त्र, भाष्य ग्रन्थ, टीका ग्रन्थ इत्यादि पढ़ने के लिए संस्कृत आना अनिवार्य है।

यही हाल आयुर्वेद का है। विदेशों में आयुर्वेद के औषधियों की मांग लगातार बढ़ रही है। कुछ समय पश्चात् आयुर्वेद पढ़ने के लिए विदेशी छात्र प्रवृत्त होंगे। तब आयुर्वेद के ग्रंथों को पढ़ने के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक हो जाएगा। जो जो भारतीय शास्त्र है उनको पढ़ने के लिए संस्कृत अनिवार्य है। जैसी विदेशियों की जिज्ञासु प्रवृत्ति है यह अवश्य संस्कृत पढ़ेंगे। तब पढ़ाने वाले शिक्षकों की वैश्विक मांग होगी। जैसा की मैंने पूर्व में लिखा है– संस्कृत आंग्ल माध्यम में नहीं सिखा पाएंगे। अतः अनिवार्य रूप में संस्कृत माध्यम में पढ़ाना पड़ेगा। क्या भारत के शिक्षक इसके लिए तैयार है? यह मेरी कल्पना का विलास भर नहीं है। एक वर्ष पूर्व संस्कृतभारती के पास एक स्पेनिश भाषी आर्टिटेक्ट महिला आयी। उसे भारतीय आर्टिटेक्चर पढ़ना था। उसको यह समझ में आ गया कि भारतीय आर्टिटेक्चर पढ़ने के लिए संस्कृत आना अनिवार्य है। यह संस्कृतभारती के बेंग्लुरू कार्यालय में रूककर संस्कृत सीखी। तत्पश्चात् भारतीय आर्टिटेक्चर पर उसने अपना प्रबन्ध लिखा। यह हमारा दुर्भाग्य है कि भारतीय अपनी विद्या सीखने के लिए तत्पर नहीं है। नहीं तो जैसे आयुर्वेद के पाठ्यक्रम में संस्कृत सीखना अनिवार्य है वैसा सभी व्यावसायिक महाविद्यालयों में होता है। वर्तमान केन्द्र सरकार ने योजनापूर्वक व्यावसायिक महाविद्यालयों में एच्छिक विषय के रूप में संस्कृत लाने का प्रयास प्रारम्भ किया है। लगभग दो सौ महाविद्यालयों में ऐच्छिक विषय के रूप में संस्कृत लाने का प्रयास प्रारम्भ किया है। लगभग दो सौ महाविद्यालयों में जहां संस्कृत विषय पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं है वहां केन्द्र सरकार ने अपनी ओर से वेतन की व्यवस्था कर प्राध्यापक को भेजज्ञ है। इच्छुक छात्र एवं प्राध्यापक संस्कृत की कक्षाओं में बैठते है।

जहां तक विद्यालयीन शिक्षा का संबंध है सर्वाधिक शिक्षक आड्ग्ल भाषा के है। तत्पश्चात् संस्कृत का ही क्रम आता है। उच्च शिक्षा में तो संस्कृत प्राध्यापकों की संख्या सर्वाधिक है। कारण सामान्य महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संस्कृत की शिक्षा दी जाती है। इस कारण प्राध्यापक भी नियुक्त होते है। इसके अलावा १४ की संख्या में संस्कृत के विश्वविद्यालय है। इतनी संख्या में तो किसी विषय के विश्वविद्यालय नहीं है। प्रत्येक संस्कृत विश्वविद्यालय में कम से कम साहित्य, व्याकरण, दर्शन, वेद, ज्योतिष एवं शिक्षाशास्त्र ये विभाग तो होते ही है। अतः प्रत्येक विभाग में आचार्य, सह आचार्य, सहायक आचार्य ये तो पद सृजित किये ही जाते है। इस कारण महाविद्यालयीन प्राध्यापकों की संख्या बढ़ जाती है।

जहां तक पुरोहितों का प्रश्न है वे तो ८ वर्ष की अवस्था में गुरूकुल में प्रविष्ट होते है। वहां ६ से १२ वर्ष तक वेदाध्ययन कर गुरूकुल के विद्यार्थी पौरोहित्य करने लगते है। समाज में पुरोहितो की आवश्यकता अधिक होने के कारण वैदिकों को १४वें वर्ष में ही धन दक्षिणा के रूप में प्राप्त होने लगता है। इस प्रकार का कौन सा पाठ्यक्रम भारत में है जो वय के १४वें वर्ष से ही धन देने लगे? और तो और क्या यजमान और क्या उसकी पत्नी उसके घर के सभी व्यक्ति पुरोहित के चरण स्पर्श करते है। ज्योतिषी भी बिना किसी पून्जी के व्यवसाय आरम्भ करता है और पर्याप्त धन कमाता है। अतः संस्कृत या वेद का विद्यार्थी अन्य विषयों की अपेक्षा कम बेरोज़गार है।

शेष पृष्ठ 10 पर

सत्यासारणीः संस्था या दानव

केरल के मलप्पुरम जिले में "मरकजुल हिदया सत्या सारणी" संस्था को भले ही बहुत कम लोग जानते हों पर यह संस्था इस समय केरल के हिन्दू समुदाय के लिए एक दानव का रूप धारण कर चुकी है। वह दानव जिसकी गुफा में जो जाता है वह वापस ऐसा नहीं आता। वैसे दिखावे को तो यह संस्था कहती है कि केरल का धार्मिक क्षेत्र मनुष्य देवताओं की पकड़ में है, हम आध्यात्मिक सुधर और ईश्वर के डर की खोज के बजाय अर्थहीन संस्कार करते हैं। मानसिक अराजकता और उथलपुथल से हताश लोगों के लिए सत्यासारिणी एक सच्चाई की यात्रा है। असल में इस संस्था की सच्चाई का रास्ता धर्मातरण पर आकर खत्म हो जाता है। हाल ही में एक टीवी चैनल के "ऑपरेशन कन्वयर्जन फैक्ट्री" से यह खुलासा हुआ है कि इस संगठन के शीर्ष पदाधिकारियों ने साफतौर से यह स्वीकार किया था कि वे बड़े पैमाने पर धर्मातरण, अवैध फाइनेंसिंग करते हैं और उनका अंतिम लक्ष्य भारत को एक इस्लामी देश बनाना है।

आज से करीब पांच साल पहले अस्तित्व में आई सत्यासारणी संस्था का उद्घाटन ७ जनवरी २०१२ को हुआ था, संस्था एक मुस्लिम बहुल इलाके से अपना कार्य करती है दिखने में यह पूरी तरह शैक्षिक परिसर जैसा है जो एक बार में २०० व्यक्तियों का आयोजन करता है। पुरुषों और महिलाओं, कक्षा के कमरे, मस्जिद, पुस्तकालय, दवाखाने, कार्यालय, बैठक हॉल, डाइनिंग हॉल आदि छात्रावासों के साथ बनाये गये है। संस्था के अधिकारी स्वीकार करते हुए बताते हैं कि सत्यासारिणी में हिन्दू और ईसाई दोनों धर्म के लोग आते हैं जिनका ब्रेनवाश कर इस्लाम में आने की दावत दी जाती है।

हालाकि धर्म परिवर्तन वही लोग करते जो वैचारिक रूप से कमजोर होते हैं किन्तु कई बार इन्सान को वैचारिक रूप से कमजोर भी कर दिया जाता है जिसका ताजा उदाहरण है केरल है पिछले दिनों जहां एक महिला ने अपनी बेटी को जबरन मुस्लिम बनाने की शिकायत जिले के पनगोड़ थाने में दर्ज की थी महिला का अरोप है कि उसकी बेटी अपर्णा को कुछ लोगों ने गुमराह करके इस्लाम अपनाने का दबाव डाला था, जिसके बाद उसने अपना नाम अपर्णा से शबाना कर लिया है। पढ़ाई के लिए साल २०१३ में एर्नाकुलम गयी थी। लेकिन आज गैर मुस्लिमों के बीच इस्लाम का प्रचार करने वाली संस्था 'सत्यासारणी' में रहती है। इसमें गौर करने वाली बात यह है कि अपर्णा से पहले हिन्दु लड़की निमिषा से फातिमा बनी का भी जबरन धर्म परिवर्तन का मामला सामने आया था, बताया जा रहा है फातिमा २० अज्ञात लड़कों के साथ इराक या सीरिया पहुंच चुकी है।

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

शेष पृष्ठ 6 का **आर्थिक परिदृश्य में क्रान्ति.....**

बनायेगे! ऐसी स्थिति में नोटबंदी ने एक आर्थिक क्रान्ति को जन्म दिया है, जिसमें आप मात्र अपनी परिश्रम की कमाई जिस पर आप 'कर' देते हैं, को न्यायोचित ढंग से किस तरह खर्च करते हैं, यह तय किया जाता है। आज अर्थ अनर्थकारी होने से कुछ जीवन शैली पर काले धब्बे पड़े दिखाई देने लगे हैं। जो इस प्रकार हैं–

चौदह महत्त्वपूर्ण बिन्दु

१. अनावश्यक अपव्यय, प्रदर्शनभरी शादियाँ एवं उत्सवों में दिखावा।
२. बेनामी सम्पत्ति खरीदकर भूपति बनने का शौक।
३. कर की चोरी करते हुए सारे सामाजिक अपराध करना।
४. शराबखोरी, ऐसी पार्टियों में भागीदारी, तम्बाकू से लेकर सभी तरह की नशीली प्रवृत्तियों में लीन होना।
५. शोषण की वृत्ति का विकास। अपने सामने किसी छोटे को पनपने न देना।
६. रिश्वतखोरी, जमाखोरी, कामचोरी, हरामखोरी।
७. शिक्षा की डिग्री को ही सब कुछ मानकर ढेरों राशि खर्च कर अपने बच्चों को पढ़ाना, ऐसी कैपिटेशन–फी (जो लाखों–करोड़ो में आती है) पर आधारित संस्थाएँ खड़ी करना, उनके संचालन में भागीदारी करना। इस तरह विद्या की दुर्गति करना।
८. शराब होश छीन लेती है, घर बर्बाद कर देती है। एवं सबसे बड़ी बात समाज में छोटी–सी बच्ची या बच्चे पर दुराचार से लेकर गैंगरेप जैसे जघन्य काण्डों को जन्म देती है, यह जानते हुए भी उस व्यवसाय से परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहना।
९. एक घृणित शिक्षा व्यवसाय को बढ़ावा देना और इसके माध्यम से समाज के एक वर्ग को पक्षाघात द्वारा अलग, नाकारा बना देना। धार्मिक संगठन यदि इसे बढ़ावा देते हैं, तो उन्हें भी अब सतर्क होना होगा। दान मात्र औचित्यपूर्ण, श्रम आधारित होना चाहिए।
१०. लूटता बचपन, मासूम बच्चों का व्यवसाय, उनका अपहरण एवं उनसे जबरन काम कराना, यह भी सभी आर्थिक क्षेत्र की सामाजिकता से जुड़ी बुराइयाँ हैं, जो अब घर कर गयी हैं।
११. राष्ट्र को अपना अभिभावक, देश को माँ मानते हुए इसकी संपत्ति को नुकसान पहुँचाना, विकास में अवरोध पहुँचाना आदि सभी इन बुराइयों में आते है, जो जुड़ती चली जाती हैं। अराजकता इसी से पनपती है। चुनाव व्यवस्था में इसीलिए पारदर्शिता जरूरी है, ताकि न्यायोचित ढंग से निर्वाचित प्रतिनिधि ही शासन सँभालें एवं गवर्नेन्स का कार्य करें। अभी यह नहीं हो पा रहा है।
१२. एक क्रान्ति आध्यात्मिक–धार्मिक संगठनों में भी लानी होगी। उनको दिया गया धन–भेंट–राशि धर्म के प्रति सम्मान के कारण है। वे राष्ट्र की रचनात्मक योजनाओं में उसका नियोजन करें। यदि बदलाव उपदेश देने वालों की ओर से आयेगा तो निश्चित ही जन–मानस उसे अपनायेगा। यदि देश के सभी धार्मिक–लोकसेवी संगठन (हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि) एक स्वर से बोलने लगें, तो कहीं कोई समस्या न पैदा हो। सारा धन जो अरबों–खरबों में आता है, सही प्रयोजन में लगेगा एवं दान देने वालों के साथ न्याय होने लगेगा। एवं दान देने वालों के साथ न्याय होने लगेगा। फिर सरकारं को न्यायोचित कर एवं धार्मिक संगठनों को उचित दांन देकर स्वयं को धन्य महसूस करेंगे।
१३. हमारे वृक्ष–पहाड़, ग्लेशियर्स जिन्दा रहने चाहिए। भू–माफिया इनके साथ खिलावाड़ करता रहता है। पैसा कमाने की होड़ में बने होटलों के साथ केदारनाथ आपदा के समय महाकाल का रौद्र दण्ड हम देख चुके हैं।

हमें इन काले धब्बों को मिटाना होगा। तभी आर्थिक परिदृश्य में बदलाव होगा। देश की उन्नति, प्रगति एवं समृद्धि का रास्ता निकलेगा और भारत देश जगदगुरु–सोने की चिड़िया के रूप में प्रतिष्ठित होगा। हमें इसके लिए तैयार रहना चाहिए।

शेष पृष्ठ 9 का **क्या संस्कृत पढ़ने से.....**

सामान्यतः भारतीय भाषा के पत्रकार लिखते या बोलते समय अशुद्ध भाषा का प्रयोग करते है। अतः यदि संस्कृत भाषा आत्मसात किया हुआ स्तंभलेखक या संवाददाता बन जाता है तो वार्ता लेखन या कथन में शुद्धता आयेगी। तभी समाज भी शुद्ध भाषा का प्रयोग सीखेगा।

अतः निवेदन है कि संस्कृत के अध्ययन से अर्थार्जन कैसे होगा यह चिन्ता त्यागे और अधिक मात्रा में संस्कृत सीखे।

क्यों सोया है हिन्दू समाज

- उपमहाद्वीप में हिन्दुओं की जनसंख्या प्रतिशत में खेदजनक गिरावट आ रही है, उसके कारणों को विचारणीय क्यों नहीं मनाता हिन्दू समाज?
- साम्प्रदायिक लक्षित हिंसा विधेयक हिन्दुओं के अस्तित्व को ही समाप्त कर सकता है। इसकी गम्भीरता को क्यों नहीं समझ रहा है, हिन्दू समाज?
- श्रीमती सोनिया गांधी के मार्गदर्शन में इस विधेयक का निर्माण हुआ। क्या कांग्रेस के हिन्दू नेताओं ने स्वधर्म हित के दायित्व का निर्वाह किया? क्या हमारे धर्मगुरूओं ने उसका विरोध किया?
- धर्मान्तरण के लिये हिन्दुओं को सरल लक्ष्य समझा जाता है, आखिर हमारी धार्मिक संस्थायें जो विश्व में सर्वाधिक धनी है, धर्म प्रचार का कार्य क्यों नहीं करती?
- दक्षिणी पांच राज्यों में हिन्दू मन्दिरों की आय का 80 प्रतिशत मदरसों और चर्चो को दे दिया जाता है, जबकि उसका प्रयोग वनवासी, वंचित और निर्धन हिन्दुओं के कल्याणार्थ व्यय होना चाहिये था। हिन्दू समाज सन् 1950 से आज तक इन अन्याय को क्यों सहन कर रहा है?
- हिन्दू संज्ञा भारत में जनित सभी पंथों के लिये है। यह एक भौगौलिक आध्यात्मिक निष्ठा को प्रदर्शित करने वाला शब्द है। जैन, बौध, सिक्ख आर्य समाजी, और सनातनी सभी हिन्दू है। फिर हिन्दू शब्द की संकीर्ण परिभाषा क्यों?
- हम आर्य है। यह गुणवाचक संज्ञा है। ऋषियों के ज्ञान ने हमें आर्य होने का गौरव दिया। आर्यगुण समूह में कोई जातिवाद नहीं है। फिर यह जातिवाद कहां से आया? आर्य केवल आर्य होता है, उसकी दूसरी कोई समूहगत पहचान नहीं होती।
- भारत के विभिन्न पंथों में समान सूत्र हैं। उन सूत्रों का प्रचार क्यों नहीं होता, ताकि धार्मिक एकता का विकास हो।
- अनुच्छेद 30 हिन्दुओं को धार्मिक शिक्षा से रोकता है, इस अनुच्छेद का विरोध क्यों नहीं हुआ?
- भारतीय लोक भाषाओं और संस्कृत को समाप्त किया जा रहा है। पूरा देश मौन है। यदि भाषा चली गई तो संस्कृति भी नष्ट हो जायेगी। हिन्दू समाज क्यों सोया है?

हिन्दुओं! जागो! उठो! संघर्ष करो

भारत की पहचान नष्ट मत होने दो
हम है आपके साथ

अखिल भारत हिन्दू महासभा

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 4 का

गुर्दों की अक्षमता एक.....

क्रिटीनिन नामक पदार्थ बढ़े हुये मिलते हैं लेकिन धीरे–धीरे नाइट्रोजन युक्त विजातीय पदार्थों को गुर्दों द्वारा ठीक से बाहर न निकाल सकने के कारण गुर्दों की अक्षमता के विभिन्न लक्षण प्रकट हो जोते हैं। यहाँ तक कि कुछ रोगियों के रक्त में यूरिया की मात्रा अत्यधिक बढ़ जाती है और वह यूरिमिया की स्थिति में पहुँच जाता है और फिर यदि शीघ्र इलाज न मिले तो व्यक्ति कोमा में जा सकता है।

रोग के लक्षण

इस प्रकार की गुर्दों की अक्षमता के कारण तालिका में दिए गए हैं। यह उल्लेखनीय है कि डायबिटीज (३७ प्रतिशत) और हाई ब्लडप्रेशर जैसे बहुतायत से होने वाले रोग (२७ प्रतिशत) इस तरह की गुर्दों की खराबी के लिए उत्तरदायी हैं। रोगों में गुर्दों की अंदरूनी सामान्य संरचना और कार्यप्रणाली धीरे–धीरे विनष्ट होती जाती है। कई मामलों में गुर्दों की रक्त छानने वाली नलिकाओं की खराबियों के कारण भी यह स्थिति जरूरी है।

इस रोग में और क्या होता है

इस बीमारी में प्रायः दोनों गुर्दों का आकार छोटा हो जाता है। साथ ही रोगी के शरीर के अम्लीय पदार्थों और क्षारीय पदार्थों के मध्य संतुलन बिगड़ जाता है। यहाँ तक कि शरीर में पानी भी अधिक मात्रा में रूकने लगता है। इससे रोगी के हाथ–पैरों और पेट में सूजन आ जाती है और जैसा कि बतलाया गया है रोगी "यूरिमिया" (रक्त में यूरिया का स्तर अधिक बढ़ जाना) की स्थिति में पहुँच जाता है। रोगी के लिए यह अवस्था खतरनाक होती है।

(शेष अगले अंक में)

हिन्दू महासभा के प्रदेश अध्यक्ष चुने गए रमेश पानू पुण्य

हांसी, 26 जून (नरेन्द्र भारद्वाज): अखिल भारत हिन्दू महासभा हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष के पद पर जिला प्रधानों और प्रदेश कार्यकारिणी की केन्द्रीय मुख्यालय दिल्ली में चली 2 घंटे की गर्मा–गर्मी के बीच पदाधिकारियों को अपने पक्ष में करके रमेश पानू पुण्य हिन्दू महासभा के प्रदेश अध्यक्ष के पद पर चुने गए। चली चुनाव प्रकिया में कई दावेदार देवी राम कौशिक, सुनील भड़ाना व रमेश पानू के चुनाव मैदान में खड़े होने पर चुनाव प्रक्रिया में कर देर बाधा रही। हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक ने पदाधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्यों को अध्यक्ष चुनने के लिए एक मत राय बनाने की अपील की, जिस पर हिन्दू महासभा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य अजय सैनी ने रमेश पानू पर सहमति जताई, जिस पर रोहतक निवासी दलबीर दहिया ने भी पानू को एकमत से प्रस्ताव पास करने की पदाधिकारियों से अपील की, जिस पर सभी ने रमेश पानू पर सहमति जताते हुए उनको एक बार फिर प्रदेश अध्यक्ष का अध्यक्ष चुन लिया। इस अवसर पर हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय प्रधान महासचिव मुन्ना शर्मा, हिन्दू महासभा के प्रवक्ता ललित भारद्वाज, वीरेश त्यागी, प्रदेश महासचिव सुरेश सलूजा उर्फ काका, देवी राम कौशिक, सुनील भड़ाना सहित जिला प्रधान व प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्यों ने चुनाव प्रक्रिया में भाग लिया।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये

द्विवार्षिक.....300/- रुपये

आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 7 का

जिन्नाह के जिन्न से नही....

रहा है? भविष्य में राजनीति क्या रूप लें, अभी कहना शीघ्रता होगी क्योंकि जिन्नाहवादी पाकिस्तानी सोच राष्ट्रवादियों द्वारा मुसलमानों को अतिरिक्त लाभान्वित करवा के उनको और अधिक शक्तिशाली बनाने के लिये अपने एजेंडे पर कार्य कर रही हैं। हमारे तथाकथित राष्ट्रवादी नेता जब सत्ता से बाहर होते हैं तो सच्चर कमेटी व अल्पसंख्यक आयोग व मंत्रालय द्वारा मुसलमानों को मालामाल करने की योजनाओं का यथा संभव विरोध करने से नही चूकते और जब स्वयं सत्ता में हैं तो मुस्लिम सशक्तिकरण के लिए कोई भी मार्ग छोड़ना नही चाहते चाहे उसमें राष्ट्रवादियों को प्रताड़ना ही क्यों न झेलनी पड़ें? राजमद में ये नेता अपने सारे वायदे और सिद्धान्तों को भुला कर भविष्य में पुनः सत्ता पाने के लिये अल्पसंख्यकवाद की चपेट में आ चुके हैं। जबकि इतिहास साक्षी हैं की अल्पसंख्यकवाद का वास्तविक लाभ उठाने वाला मुस्लिम सम्प्रदाय राष्ट्रवादियों का पक्ष नही लेता। इस प्रकार की मुस्लिम उन्मुखी राजनीति समस्त राष्ट्रवादियों व संघ परिवारों से संबंधित देशभक्तों को भी आहत कर रही हैं। फिर भी अधिकांश देशभक्त इसको भाजपा की कूटनीतिज्ञता समझने को विवश हो रहें हैं। लेकिन चाटुकारों से घिरा हुआ शीर्ष नेतृत्व जब चुनाव जीतने को ही सर्वोच्च लक्ष्य मानने लगेगा तो राजनीति में सिद्धान्त हीनता की जड़ें और अधिक गहरी होती रहेगी। नेताओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि कार्यकर्ता समाज का सेवक होता है न कि किसी नेता का दास और संगठन को नेताओं से अधिक कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होती है। क्योंकि किसी भी संगठन की शक्ति उसके कार्यकर्ताओं से ही निर्मित होती है, इसलिए उनकी इच्छाओं का सम्मान व सेवाओं का मूल्यांकन होना ही चाहिये। अतः आज आवश्यकता यह है कि जिन्नाह के जिन्न से नही जिन्नाहवादी पाकिस्तानी जिहादी सोच से बचना होगा इसलिए राष्ट्रवादी नेताओं को समझना होगा कि सफल राजनीति के लिये राष्ट्रवादी समाज व कार्यकर्ताओं को रबर के समान इतना न खींचों की वह टूट कर बिखर जाये।

शेष पृष्ठ 8 का

राष्ट्रीयकरण का विकल्प.....

समस्त संबन्धित वर्गों के हितों को ध्यान में रखते हुये लिये जा सकते हैं अब यहाँ पर यह महत्त्व की बात नहीं रह जाती कि अमुक उद्योग सत्ता द्वारा नियन्त्रित है या व्यक्ति या व्यक्ति समूह द्वारा। ठीक इसी प्रकार से अधिकोषण उद्योग (बैंकिंग) का श्रमीकरण भी सम्भव है। प्रथम सदस्य अलग–अलग बैंकों के कर्मचारियों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर निर्वाचित, द्वितीय सदस्य–निक्षेयकर्ताओं (जमाकर्त्ताओ) द्वारा निर्वाचित तथा तीसरा सदस्य संसदसदस्य। अधिकोषण उद्योग में भी यह गौण बात है या बिलकुल महत्त्वहीन कि वह किसके द्वारा नियन्त्रित हैं। यदि विनियोग नियन्त्रण, ऋण नियन्त्रण, निक्षेप नियन्त्रण (डिपोजिट कन्ट्रोल) संबन्धी नीतियों तथा व्याज संबन्धी नीति के निर्णय उपर्युक्त निकाय द्वारा लिये जायें, जब तो स्वतन्त्र व्यापार पद्धति के दोषों तथा समाजवाद किंवा नौकरशाहीकरण द्वारा अन्य रोगों की विजित किया जाना तथा सच्चे अर्थो में आर्थिक लोकतन्त्र की स्थापना संभव है, जिसमें किसी के द्वारा शोषण किये जाने की संभावना न्यून है। उपर्युक्त प्रकार से उद्योगों का श्रमीकरण देश को एक ऐसी स्वस्थ अर्थ–व्यवस्था प्रदान करेगा जिसमें शोषण की संभावना न्यूनतम है, व्यक्ति स्वातन्त्र पूर्णरूप से है। तथा जिसमें उद्योग चलाने की प्रेरणा एवं उसमें रत कर्मचारियों के लगन से काम करने की भावना निहित है, अर्थात् किसी प्रकार की प्रेरणा का ह्रास संभव नहीं। विपरीत इसके, सबसे बड़ी बात यह है कि श्रमीकरण की व्यवस्था में उद्योगों का अति महत्त्वपूर्ण घटक (जैसे बीमा उद्योग में पॉलिसी धारक एवं बैंकिग उद्योग में खाता धारक/निक्षेपकर्त्ता) के हितों की रक्षा भी हो सकेगी, जो प्रायः सामान्य रूप से उपेक्षित रही है।

शेष पृष्ठ 1 का

अमेरिकी प्रतिबंध के बावजूद रूस.....

के रिश्तों को अमेरिका के कड़े सीएएटीएसए कानून से छूट मिले। भारत अगले महीने वाशिंगटन में अमेरिकी अधिकारियों के साथ बैठक में इस मुद्दे को उठा सकता है। रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कहा अमेरिका के साथ हमारे सारे संवाद में हमने स्पष्ट रूप से बताया है कि भारत व रूस का रक्षा सहयोग लंबे समय से कैसा रहा है और यह समय की कसौटी पर खरा उतरा पुराना रिश्ता हैं। हमने कहा है कि सीएएटीएसए का असर भारत– रूस रक्षा सहयोग पर नहीं पड़ सकता है। उन्होंने कहा कि रूस से भारत काफी मात्रा में रक्षा हथियार खरीदता है और दोनों देशों के बीच सहयोग जारी रहेगा।

शेष पृष्ठ 1 का

दुनियाभर में प्लास्टिक सकंट.....

अशोक बिर्री ने कहा, हम प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण के संकट की गिरफ्त में हैं। हम इसे हर जगह हमारी नदियों , हमारे महासागरों में देख सकते हैं। हमें इस संबंध में कुछ करना होगा, विशेषज्ञों ने प्लास्टिक के इस्तेमाल को लेकर और भी गंभीर खतरों का अंदेशा जताया है जो दिखाई नहीं दे रहे। माइक्रोप्लास्टिक नल के पानी में, भू–जल में और मछलियों के अंदर भी पाए गए हैं जिसे एशियाई लोग हर दिन खाते हैं। इस बार के पर्यावरण दिवस की थीम प्लास्टिक प्रदूषकों से निपटने पर आधारित है।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

12 साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता निष्कर्ष दिनांक 04 जुलाई से 10 जुलाई 2018 तक

यह भी सच है

हिंदी के नाम पर पाखंड

ताजा खबर यह है कि विश्व हिंदी सम्मेलन का ११ वां अधिवेशन अब मोरिशस में होगा। मोरिशस की शिक्षा मंत्री लीलादेवी दोखुन ने सम्मेलन की वेबसाइट का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि 'आज हिंदी की हालत पानी में जूझते हुए जहाज की तरह हो गई है।' अच्छा हुआ कि उन्होंने डूबते हुए जहाज नहीं कहा। पिछले ७० सालों में यदि हमारी सरकारों का वश चलता तो वे हिंदी के इस जहाज को डुबाकर ही दम लेतीं। स्वतंत्र भारत की सरकारों को कौन चलाता रहा है? नौकरशाह लोग ! ये ही लोग असली शाह हैं। हमारे नेता तो इनके नौकर हैं। हमारे नेता लोग शपथ लेने के बाद दावा करते हैं कि वे जन–सेवक हैं, प्रधान जन–सेवक! यदि सचमुच जनता उनकी मालिक है तो उनसे कोई पूछे कि तुम शासन किसकी जुबान में चला रहे हो? जनता की जुबान में? या अपने असली मालिकों, नौकरशाहों की जुबान में ? आज भी देश की सरकारों, अदालतों और शिक्षा–संस्थाओं के सारे महत्वपूर्ण काम अंग्रेजी में होते हैं। संसद में बहसें हिंदी में भी होती हैं, क्योंकि हमारे ज्यादातर सांसद अंग्रेजी धाराप्रवाह नहीं बोल सकते और उनके ज्यादातर मतदाता अंग्रेजी नहीं समझते। लेकिन संसद के सारे कानून अंग्रेजी में ही बनते हैं। हिंदी के नाम पर बस पाखंड चलता रहता है। ४३ साल पहले जब पहला विश्व हिंदी सम्मेलन नागपुर में हुआ था, तब मैंने 'नवभारत टाइम्स' में संपादकीय लिखा था 'हिंदी मेलाः आगे क्या?' उस संपादकीय पर देश में बड़ी बहस चल पड़ी थी लेकिन जो सवाल मैंने तब उठाए थे, वे आज भी मुंह बाए खड़े हुए हैं। हर विश्व हिंदी सम्मेलन में प्रस्ताव पारित होता है कि हिंदी को संयुक्तराष्ट्र की भाषा बनाओ। वह राष्ट्र की भाषा तो अभी तक बनी नहीं और आप चले, उसे संयुक्तराष्ट्र की भाषा बनाने ! घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने !! इस सम्मेलन पर हमारे विदेश मंत्रलय के करोड़ों रु. हर बार खर्च हो जाते हैं लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकलता। हमारी विदेश मंत्री सुषमा स्वराज स्वयं हिंदी की अनुपम वक्ता हैं और मेरे साथ उन्होंने हिंदी आंदोलनों में कई बार सक्रिय भूमिका निभाई है लेकिन वे क्या कर सकती है? हिंदी के प्रति उनकी निष्ठा है लेकिन वे सरकार की नीति–निर्माता नहीं हैं।वे सरकार नहीं चला रही हैं। सरकार की सही भाषा नीति तभी बनेगी, जब जनता का जबर्दस्त दबाव पड़ेगा। लोकतंत्र की सरकारें गन्ने की तरह होती हैं। वे खूब रस देती हैं, बशर्ते कि उन्हें कोई कसकर निचोड़े, मरोड़े, दबाए, मसले, कुचले ! यह काम आज कौन करेगा?

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

राष्ट्रहित की राजनीति करें

आज देश में विभिन्न राजनेता मुख्यतः लोकतंत्र के उच्च मापदंडों को त्याग कर राष्ट्रहित से दूर होकर आम नागरिकों की भावनाओं का दोहन करने में अधिक सक्रिय हो गये हैं। इसीलिए हम सब देशवासी ऐसे राजनीतिज्ञों व देशद्रोही षडयंत्रकारियों के झांसे में आकर अप्रत्यक्ष रूप से अज्ञानवश अपने को ही हानि पहुँचा रहें हैं। हम क्यों नही सोचते कि यह समाज, यह नगर, यह प्रदेश और सम्पूर्ण देश हमारा ही तो हैं, फिर हम क्यों ऐसे भ्रम फैलाने वाले सत्ता लोभी नेताओं के असामाजिक व अराष्ट्रीय मानसिकता को नही समझते? हम स्वर्ण व दलित के तथाकथित भेदभरे रिसते हुए घावों को भरने के स्थान पर उसे क्यों हरा होने दें? क्या ऐसे नेताओं के रहते भारतविरोधी शक्तियां हमको खंडित करने के लिये अपने–अपने स्तर से और अधिक सक्रिय नही हो जायेगी? विचार करना होगा कि हमारे देश के नेताओं की सत्ता लोभी राजनीति का परिणाम कितना भयंकर हो सकता हैं? क्यों नही राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिये राजनीति को पवित्र करके एक ऐसी राष्ट्रनीति अंपनायी जाती जिससे सभी वर्गों व पंथों को समान अधिकार मिलें और देश सुदृढ़ हो सकें? क्या हम कभी देश की राजनीति में निरंतर हो रही गिरावट पर चर्चा करके राष्ट्रहित में इसको पावन करने के लिये कोई मार्ग ढूंढने का प्रयास करेंगे? जबकि आधुनिक भोगवादी युग की चकाचौंध से आकर्षित होकर उसे पाने की अभिलाषा में आज विभिन्न राजनैतिक दलों के सामान्य कार्यकर्ताओं में नेता बनने की होड़ लगी हुई हैं। सामान्यतः राजनीति तो राष्ट्रनीति निश्चित करके सम्पूर्ण समाज के हितों के लिये कार्य करते हुए राष्ट्र को विकास के मार्ग पर ले जाने के लिये प्रतिबद्ध होती हैं। परंतु वह आज आत्मप्रवंचना व आनंददायी जीवन शैली व्यतीत करने का माध्यम बनती जा रही हैं। जिस कारण राजसत्ता के प्रति मोह बढ़ने से विभिन्न नेताओं में तीव्र प्रतिद्वंदिता छिड़ी हुई हैं। इसीलिए ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में देश के उज्ज्वल भविष्य के लिये किसी भी प्रकार के चिंतन व त्याग का पूर्णतः आभाव बना हुआ हैं। परिणामतः देशभक्ति या राष्ट्रप्रेम की अनभिज्ञता से अधिकांश युवा पीढी को सरलता से भ्रमित करके उनको असामाजिक, अराष्ट्रीय व देशद्रोही आंदोलनों में झोंकना भी सरल हो गया हैं। अभी पिछले दिनों २ अप्रैल को देश के विभिन्न भागों में जो हुआ वह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण था। यह कोई आंदोलन नही बल्कि षडयंत्रकारियों द्वारा सुनियोजित अराजकता का निंदनीय प्रदर्शन था। अतः भविष्य में ऐसी स्थिति पुनः न उभरे और सभी षडयंत्रकारियों की भारत विरोधी योजनाऐ विफल हो सकें इसके लिये हम सबकी यह प्राथमिकता होनी चाहिये कि राष्ट्रहित में एकजुट रहें और राष्ट्र की एकता व अखंडता को सुरक्षित करें। इस प्रकार संभवतः हम देश के विभिन्न राजनैतिक दलों को भी राष्ट्रहित की राजनीति करने के लिये प्रेरित कर सकेंगे।

कबिरा खड़ा बजार में

मजबूर किसान मस्त सरकारें

मध्यप्रदेश के मंदसौर में किसानों की सभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने किसानों को न्याय दिलाने और प्रदेश में सरकार बनने की स्थिति में दस दिन के भीतर कर्ज माफ करने का वादा किया। उधर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सरकार बनते ही सबसे पहले जो काम किए थे उनमें से एक काम कृषि मंत्रालय का नाम बदलकर कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय करना भी था। मोदी पहले ही घोषणा कर चुके हैं कि २०२२ तक किसानों की आमदनी दुगनी कर दी जाएगी। दोनों नेताओं की नीयत पर शक करने की बहुत जरूरत नहीं है, लेकिन फिर भी सवाल उठता है कि देश की आर्थिक नीतियां क्या वाकई किसान को दरिद्रता के चंगुल से निकालने वाली हैं। या फिर यह नीतियां उसी दिशा में जा रही हैं। यहां हम उदारीकरण के बाद से किसानों के लिए देश में बन रही नीतियों की समीक्षा करने के बजाय कुछ महत्वपूर्ण पैरामीटर्स उठाकर देख लेते हैं, जिनसे पता चलेगा कि किसान आगे जा रहा है, या पीछे। यह कितने दुख की बात है कि देश के किसानों को अपनी मांगे सरकार के कानों तक पहुंचाने के लिए बार–बार सड़क पर उतरना पड़ता है। महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली ऐसे तमाम राज्यों में पिछले साल से लेकर अब तक कई बार किसान आंदोलनरत हुए। तपती धूप में कभी अकेले, तो कभी परिवारवालों के साथ किसान जुलूस निकालते हैं, अपनी मजबूरी दिखाने के लिए दूध–सब्जियों को सड़क पर फेंकते हैंए कभी अर्द्धनग्न होकर प्रदर्शन करते हैं। लेकिन सरकार मानो चिकना घड़ा है, जिस पर किसी के दुख–दर्द का कोई असर ही नहीं होता। आंकड़े बताते हैं कि २०१३ से अब तक हर साल १२ हजार से ज्यादा किसानों ने आत्महत्या की है। क्या किसी विकासशील देश के लिए यह आदर्श स्थिति हो सकती है। क्या हम किसानों की लाशों पर नए भारत की इमारत खड़ी करना चाहते हैं। मोदी सरकार कहती है कि देश को विकास चाहिए और जनता इस भुलावे में आ गई कि विकास से पेट भर जाएगा। किसानों की तकलीफ क्या है, इसे समझने के लिए हम एक दिन बिना खाए,पिए रहें और सोचें कि जीवन भर अगर ऐसी ही फाकाकशी रहे तो कैसा लगेगा। जब हम अनाज उपजाने की मेहनत और संघर्ष को समझेंगे तो शायद किसानों की तकलीफ का कुछ अनुमान लगा सकेंगे। रहा सवाल किसानों की मांगों का तो वे केवल अपना हक ही चाह रहे हैं। पूरी कर्जमाफी और उपज का लाभकारी मूल्य, इन दो मांगों के कारण ही किसानों को आंदोलनरत होना पड़ा है। और ये कोई नई मांगे नहीं हैं, किसान लंबे समय से इसे सरकार के सामने रखते आए हैं। स्वामीनाथन आयोग ने भी सिफारिश की थी कि किसानों को उपज का डेढ़ गुना मिलना चाहिए। भाजपा ने सत्ता में आते ही इस सिफारिश को लागू करने का वादा किया था। किसानों की आमदनी दोगुनी करने का सपना भी नरेन्द्र मोदी ने दिखाया था। लेकिन चार साल हो गए, न किसानों की मांगें पूरी हुई, न सरकार के वादे। प्रचारप्रिय सरकार हर बात को प्रचार के नजरिए से देखती है। लेकिन माननीय मंत्री और प्रधानमंत्री यह समझ लें कि किसान कोई राजनेता नहीं हैं, जो प्रचार के भूखे होंगे, वे केवल जायज मांगें उठा रहे हैं, जिसे पूरा होना ही चाहिए।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 04 जुलाई से 10 जुलाई 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।